जयतु संस्कृतम् | जयतु भारतम्

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

(राजस्थान विधानसभा के अधिनियम द्वारा स्थापित शासकीय विश्वविद्यालय)

प्रवेश विवरणिका (Prospectus)

शैक्षणिक सत्र - 2023-24

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

मदाऊ, भांकरोटा-मुहाना लिंक रोड़, जयपुर (राज.) - 302 026

दूरभाष : 0141-2850551-75 • e-mail : jrrsu@yahoo.com • @JRRSU

website : www.jrrsanskrituniversity.ac.in

प्रेरणा-स्रोत

संतशिरोमणि ब्रह्मपीठाधीश्वर काठियापरिवाराचार्य श्रीखोजीद्वाराचार्य पद्मश्री विभूषित श्रीनारायणदास जी महाराज

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय को पुष्पित एवं पल्लवित करने में प्रेरणापुंज के रूप में पद्मश्री विभूषित श्रीनारायणदास जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 1998 में 'राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम' राजस्थान विधानसभा में पारित होकर 6 फरवरी, 2001 को विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। तदुपरान्त राज्य सरकार से ग्राम मदाऊ में लगभग 311 बीघा भूमि आवंटित होने पर महाराजश्री द्वारा 17 अप्रैल, 2003 को निर्मित भवन का शिलान्यास करवाया गया जिसमें महाराजश्री ने लगभग 50 करोड़ राशि व्यय कर विशाल परिसर की स्थापना एवं भवनों का निर्माण कर संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति **''परोपकाराय सतां विभूतयः''** को चरितार्थ किया है।

कुलगीतम्

श्रीजगद्गुरुरामानन्दाचार्यसंस्मृतिदायकोऽयम्।
जयति राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यानायकोऽयम्।।

सत्फलं माघाशिषां राणाप्रतापचरित्रचित्रम्
मन्दिरं मधुसूदनस्य सरस्वती-पुष्करपवित्रम्
भूत-वर्तित-भाविविद्या-साधनारतिदर्पकोऽयम्
जयति राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यानायकोऽयम्।।

स्वामिरामानन्दमधुरस्वप्नसम्पूर्तौ निमग्नः
शान्तशान्तः ग्रामपरिवेषे स्थितः स्वाध्यायलग्नः
भात्यहो हिमहारधवलः शारदाप्रावारकोऽयम्
जयति राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यानायकोऽयम्।।

मरुवणेषु विराजते सम्मान्यरामानन्दपीठे
स नारायणदास आचार्यो मतश्चात्मप्रतिष्ठे
तस्य संकल्पाशिषां साकारविग्रहधारकोऽयम्
जयति राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यानायकोऽयम्।।

प्रत्ननूतनशास्त्ररक्षी साम्प्रतिकशिक्षाभिमानी
संगणकशिक्षः कलादक्षश्च विद्याविनयदानी
सन्ततं सर्वोदये संस्कारसंस्कृतिधारकोऽयम्
जयति राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यानायकोऽयम्।।

प्रो. रामसेवक दुबे

कुलपति
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर - 302026

आषाढ कृष्ण त्रयोदशी, वि.सं. २०८०
16 जून, 2023

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा

भारतीय संस्कृति की आधारस्थली संस्कृत भाषा न केवल भारत अपितु विश्व की प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम भाषा है। संस्कृत भाषा भारतीय दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों, नाटककारों, वैयाकरणों, न्यायविदों आदि की भाषा रही है। संस्कृत भाषा वैज्ञानिक विचारों को अत्यन्त स्फुटता, तर्क एवं लालित्य के साथ व्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है। संस्कृत भाषा भारत की पहचान है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की धुरी है। इस भाषा के सशक्त व्याकरण के कारण इसकी शब्दनिर्माण योजना विशिष्ट है। ध्वनिमाला व ध्वनिक्रम के रूप में पाणिनिकाल से प्रचलित संस्कृत वर्णमाला आज भी विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक वर्णमाला है। अतः प्राचीनता, विशिष्टता एवं नवीनता से परिपूर्ण संस्कृत भाषा वर्तमान युग में भी उतनी ही उपादेय एवं प्रासंगिक है। संस्कृत के अध्ययन के महत्व को दृष्टिगत करते हुए देश की सांस्कृतिक विरासत एवं प्राचीन ज्ञान को आधुनिकता के साथ समन्वित कर प्रस्तुत करना संस्कृत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है अतः उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत में संस्थापित संस्कृत विश्वविद्यालयों की शृंखला में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय है। मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे राजस्थान सरकार के अथक प्रयासों के सुपरिणामस्वरूप सुप्रतिष्ठित इस विश्वविद्यालय के कुलपतिपद का दायित्व निर्वहन का सुअवसर प्राप्त हुआ, साथ ही संस्कृत की सेवा का भी स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है।

संस्कृत नाम दैवीवाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणी भारती।।

संस्कृतभाषा में सुगुम्फित शास्त्रपरम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ-साथ आधुनिक पद्धति का समाश्रय कर संस्कृत के संवर्धन हेतु यह विश्वविद्यालय विभिन्न नवाचारों के सहित प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय में परम्परागत अध्ययन की शास्त्री, आचार्य, योगविज्ञान शास्त्री, योगविज्ञान आचार्य, शिक्षाशास्त्री, शिक्षाचार्य, कर्मकाण्ड पौरोहित्य, पीजीडीवाईटी, पीजीडीसीए, ज्योतिष डिप्लोमा सहित विभिन्न सामयिक महत्व के पाठ्यक्रम संचालित हैं। इस सत्र से बी.ए. एवं एम.ए. संस्कृत विषय सहित पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किए जा रहे हैं। NEP-20 के अनुसार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए जाने की योजना प्रक्रियाधीन है।

अनुसन्धान केन्द्र द्वारा विद्यावारिधि (Ph.D.) एवं विद्यावाचस्पति (D.Lit.) जैसी अनुसन्धानात्मिका उपाधियाँ भी शोधच्छात्रों को प्रदान की जाती है।

मेरा प्रयास है कि यह संस्कृत विश्वविद्यालय शास्त्रीय एवं आधुनिक पद्धतियों के समन्वित स्वरूप के साथ निरन्तर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिशील रहे। आप ज्ञान की इस सांस्कृतिक तपोभूमि में प्रवेश लेकर अपने व्यक्तित्व निर्माण, मूल्यनिष्ठता, संयम के साथ प्रगतिशील जीवन व्यवहार के माध्यम से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर अपना उज्जवल भविष्य बनायें। एतदर्थ आप सभी प्रवेशार्थी विद्यार्थियों के स्वर्णिम एवं उज्जवल भविष्य हेतु अनन्त शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

जयतु संस्कृतं जयतु भारतम्...

(प्रो. रामसेवक दुबे)

विश्वविद्यालय कार्यपरिषद्

प्रो. रामसेवक दुबे
माननीय अध्यक्ष

श्री राजेन्द्र पारीक
माननीय विधायक-सीकर
सदस्य

श्री लक्ष्मण मीणा
माननीय विधायक-बस्सी
सदस्य

प्रो. केशरीनन्दन मिश्र
माननीय राज्यपाल प्रतिनिधि
सदस्य

प्रो. रामकिशोर शास्त्री
राज्य सरकार प्रतिनिधि
सदस्य

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा
शिक्षक प्रतिनिधि
सदस्य

डॉ. माताप्रसाद शर्मा
कुलपति नामित
संकायाध्यक्ष सदस्य

श्री सुनील शर्मा (IAS)
आयुक्त, कॉलेज शिक्षा
पदेन सदस्य

प्रो. भास्कर शर्मा
निदेशक, संस्कृत शिक्षा
पदेन सदस्य

श्री दुर्गेश राजोरिया (RAcS)
कुलसचिव (कार्यवाहक)
पदेन सदस्य सचिव

विश्वविद्यालय-परिचय

भारतीय ज्ञानोपासना की आधार संस्कृत भाषा में सन्निहित संपूर्ण वाङ्मय के सांगोपांग अध्ययन एवं अध्यापन, सतत विशेषज्ञीय अनुसंधान, आनुषंगिक अन्य विषयों के व्यवस्था निमित्त, संस्कृत वाङ्मय में निहित ज्ञान-विज्ञान की अनुसंधान पर आधारित सरल वैज्ञानिक पद्धति से व्यावहारिक व्याख्या के प्रस्तुतीकरण एवं संस्कृत अनुसंधानों के परिणामों तथा उपलब्धियों को प्रकाशित करने के उद्देश्य से राजस्थान प्रदेश में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गई । वर्तमान में जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय नाम से प्रतिष्ठित यह संस्था अपरा काशी के रूप में प्रसिद्ध 'जयपुर' में भांकरोटा मुहाना लिंक रोड पर 'मदाऊ' ग्राम में स्थित है ।

राजस्थान विधानसभा द्वारा पारित राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक -1998 के अनुसरण में 6 फरवरी 2001 को राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। ब्रह्म पीठाधीश्वर पद्मश्री विभूषित श्री नारायणदास महाराज त्रिवेणी धाम के सत्संकल्प, सत्प्रयास एवं सत्प्रेरणा से विश्वविद्यालय ने मूर्त रूप धारण किया । 311 बीघा (78.85 हेक्टेयर) भूमि में सुरम्य एवं शान्त प्राकृतिक वातावरण में इस विश्वविद्यालय के विशाल परिसर के अंतर्गत विभिन्न भवनों तथा विभागों का निर्माण हुआ, जिनका शिलान्यास राजस्थान के राज्यपाल माननीय श्री अंशुमान सिंह और मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक गहलोत ने 17 अप्रैल 2003 को किया । इस ज्ञान केंद्र के विशाल परिसर का उद्घाटन 14 सितंबर 2005 को भारत गणराज्य के माननीय उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत एवं माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने किया।

विश्वविद्यालय में प्रशासनिक भवन, अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय पुस्तकालय, रामानंदाचार्य सभागार, ओपन एयर थिएटर, राजस्थान मंत्र प्रतिष्ठान, श्रीतुलसीदास सभागार सहित वेदविभाग, व्याकरणविभाग, ज्योतिषविभाग, साहित्यविभाग, दर्शनविभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग, योग विज्ञान विभाग, योगसाधना केन्द्र, अतिथि गृह, विभिन्न आवास यथा कुलपति आवास, कुलसचिव आवास, कर्मचारी आवास, मीरा बालिका छात्रावास, बालक छात्रावास प्रथम एवं द्वितीय, वार्डन आवास, चिकित्सालय, बैंक, पोस्ट ऑफिस, स्पोर्ट्स कंपलेक्स, कैंटीन, श्रीविद्यावारिधि हनुमान मंदिर, संत निवास एवं जिम्नेजियम स्थापित हैं। विश्वविद्यालय संस्कृत भाषा और शास्त्र परंपरा के अध्ययन एवं शोध हेतु विश्व स्तरीय उच्च शिक्षण संस्थान है। विश्वविद्यालय से संपूर्ण राजस्थान में शताधिक शास्त्री, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, कर्मकांड पौरोहित्य तथा योग महाविद्यालय सम्बद्धता प्राप्त हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद को माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र एवं कुलपति पद को प्रो.रामसेवक दुबे समलंकृत कर रहे हैं।

अध्ययन-अध्यापन व्यवस्था

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में अध्ययन व्यवस्था को सुदृढ़ रूप प्रदान करते हुए संकाय व्यवस्था निर्धारित की गई है। शैक्षणिक वर्ष 2023-24 से विश्वविद्यालय में 6 संकाय तथा उनके अध्यधीन विभाग व पाठ्यक्रमों का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

क्र.सं.	संकाय	समाविष्ट विभाग	समाविष्ट विषय	प्रवेश-पाठ्यक्रम
1.	**वेद वेदांग संकाय**	वेद विभाग ज्योतिष विभाग व्याकरण विभाग	ऋग्वेद, शुक्लयजुर्वेद (माध्यन्दिनशाखीय), सामवेद (कौथुमशाखीय),सामवेद (जैमिनीयशाखीय), अथर्ववेद, पौरोहित्य, धर्मशास्त्र गणितज्योतिष, फलितज्योतिष नव्यव्याकरण	1. शास्त्री (त्रिवर्षीय) 2. आचार्य (द्विवर्षीय) 3. कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य डिप्लोमा (एक वर्षीय) 4. ज्योतिष एवं वास्तु डिप्लोमा (एक वर्षीय) 5. ज्योतिष एवं वास्तु सर्टिफिकेट
2.	**दर्शन संकाय**	दर्शन विभाग योग विभाग	सामान्यदर्शन, वेदान्तदर्शन, मीमांसादर्शन, न्याय दर्शन, निम्बार्क दर्शन, वल्लभ दर्शन, रामानन्द दर्शन श्रीरामानुज दर्शन (विशिष्टाद्वैत वेदान्त) योगदर्शन	1. शास्त्री (त्रिवर्षीय) 2. आचार्य (द्विवर्षीय) 3. आचार्य (द्विवर्षीय) 4. B Sc./ BA योगा (त्रिवर्षीय) 5. M Sc./ MA योगा (द्विवर्षीय) 6. स्नातकोत्तर डिप्लोमा इन योग (PGDYT) 7. योग प्रशिक्षक प्रमाण-पत्र
3.	**साहित्य एवं संस्कृति संकाय**	साहित्य विभाग	संस्कृत वाङ्मय, साहित्य, पुराणेतिहास	1. शास्त्री (त्रिवर्षीय) 2. आचार्य (द्विवर्षीय)
4.	**श्रमण विद्या संकाय**	जैनदर्शन प्राकृत जैनागम	जैनदर्शन प्राकृत जैनागम	1. शास्त्री (त्रिवर्षीय) 2. आचार्य (द्विवर्षीय)
5.	**आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय**	हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर	सामान्य हिन्दी, सामान्य अंग्रेजी, प्रारम्भिक कम्प्यूटर अनुप्रयोग अथवा पर्यावरण अध्ययन, अंग्रेजी साहित्य, हिन्दी साहित्य, इतिहास, राजनीति विज्ञान, लोकप्रशासन, समाजशास्त्र,अर्थशास्त्र गृहविज्ञान (केवल छात्राओं के लिए)	शास्त्री (त्रिवर्षीय) (अनिवार्य एवं वैकल्पिक विषय)
6.	**शिक्षा संकाय**	शिक्षाशास्त्र विभाग 1. शिक्षाशास्त्री (द्विवर्षीय) 2. शिक्षाचार्य (द्विवर्षीय)	प्रथम वर्ष:बाल्यावस्था एवं विकास, समसामयिक भारत एवं शिक्षा, अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया, भाषा एवं पाठ्यक्रम, अध्ययन क्षेत्र एवं विषय अवबोधा, संस्कृत शिक्षण (अनिवार्य शिक्षणशास्त्र)। द्वितीय वर्ष: जेण्डर, स्कूल एण्ड सोसायटी, कोई एक विषय: हिन्दी, अंग्रेजी, नागरिक शास्त्र, सामाजिक अध्ययन, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान, गणित, ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, अधिगम आकलन, समावेशी शिक्षा, कोई एक विषय: शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन, मूल्यशिक्षा, योगशिक्षा, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, शान्ति शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड।	

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में नवीन अनुसंधान एवं शोधकार्य की निरन्तरता को बनाये रखने के लिए अनुसंधान केन्द्र एवं अष्ट शोधपीठों की स्थापना निम्नानुसार की गई है:-

1. **श्रीरामानन्दाचार्य वेदान्त पीठ**
2. **सवाई महाराज जयसिंह ज्योतिर्विज्ञान पीठ**
3. **वेद वाचस्पति मधुसूदन ओझा वेद विज्ञान पीठ**
4. **महामहोपाध्याय गिरधर शर्म चतुर्वेदी व्याकरण पीठ**
5. **भट्ट मथुरानाथ शास्त्री साहित्य पीठ**
6. **पं. नित्यानन्द शास्त्री आधुनिक संस्कृत पीठ**
7. **पद्मभूषण पट्टाभिराम शास्त्री मीमांसा एवं धर्म पीठ**
8. **महाकवि ज्ञानसागर जैनदर्शन पीठ**

विश्वविद्यालय में 21वीं सदी को वेदों से जोड़ने के लिए मंत्र, तंत्र एवं यंत्रों की शक्ति तथा प्रभाव के अनुसन्धान करने के लिए **राजस्थान मंत्र प्रतिष्ठान** की स्थापना की गई तथा इसके भवन का लोकार्पण में 24 सितम्बर, 2018 को किया गया है। सम्प्रति यह प्रतिष्ठान निदेशक डॉ. शम्भु कुमार झा के नेतृत्व में गतिमान है।

वेद एवं पौरोहित्य विभाग

भारतीय संस्कृति में ज्ञान के उद्गम वेद सनातन वर्णाश्रम धर्म के मूल तथा विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। 'वेद' शब्द संस्कृत भाषा के 'विद्-ज्ञाने' धातु से निष्पन्न है अर्थात् ज्ञान ही वेद है।

मानव का ज्ञान से सबसे पहले तादात्म्य कराने वाले विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ 'वेद' का अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से वेद एवं पौरोहित्य विभाग की स्थापना की गई है, जिसमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की कतिपय शाखाओं का सस्वर मन्त्रपाठ सहित प्रायोगिक कर अध्यापन करवाया जाता है। इन संहिताओं के सस्वर मन्त्र पाठ के साथ ब्राह्मण-आरण्यक उपनिषद् एवं विभिन्न भाष्यकारों के मत यथा सायण, महीधर, उव्वट, स्वामी दयानन्द, स्वामी करपात्री, स्कंद स्वामी प्रभृति भारतीय तत्त्वचिन्तकों के भाष्यग्रंथों का अध्यापन करवाया जा रहा है।

निरुक्त, पिंगलछन्द सूत्र, जैमिनीय न्यायमाला, अर्थसंग्रह, बृहद्देवता, कात्यायन श्रौतसूत्र, आश्वलायन श्रौतसूत्र, लाट्यायन श्रौतसूत्र एवं कतिपय गृह्यसूत्रों का अध्यापन प्रायोगिक विधि से करवाया जाता है। महर्षि अरविन्द एवं पं. मधुसूदन ओझा जैसे भारतीय और ग्रिफिथ और मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य वैदिक चिन्तकों द्वारा वेदों पर किए भाष्यों का वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अध्यापन करवाया जा रहा है। श्रौतकर्मानुष्ठान के साथ स्मार्त प्रयोग की शिक्षा नियमित रूप से दी जाती है, जिससे विद्यार्थी स्वावलंबी बनकर स्वरोजगार प्राप्त करते हैं। यहाँ शास्त्री एवं आचार्य कक्षा के साथ कर्मकाण्ड पौरोहित्य डिप्लोमा हेतु सांयकालीन कक्षाओं का भी विद्वान शिक्षकों द्वारा संचालन किया जाता है।

वेद एवं पौरोहित्य विभाग की कार्य योजनाएं

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा 1. वैदिक प्रयोगशाला की स्थापना।, 2. वेदमन्दिर में भगवान् वेद की स्थापना।, 3. वेबसाइट बनाकर योग्य वैदिक विद्वानों को पंजीकृत कर Online Demand (माँगे जाने पर) राष्ट्रीय स्तर पर यज्ञयाजन हेतु उपलब्ध करवाना।, 4. भूविज्ञान, अन्तरिक्षविज्ञान में वेदाधारित पाठ्यक्रम संचालित करना।, 5. वैदिकछात्र-छात्राओं हेतु शत-प्रतिशत रोजगार के लिए नये क्षेत्रों को चिन्हित करना।, 6. वैदिक प्रबन्धन का पाठ्यक्रम संधारित कर संचालित करना।, 7. गौआधारित शिक्षा व अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना।, 8. विशिष्टाचार्य परीक्षा अध्ययनाध्यापन हेतु ग्रन्थविशेष का पाठ्यक्रम तैयार कर प्रारम्भ करना।, 9. वेद में नवाचार का अनुसन्धान करना।, 10. गुरुकुल पद्धति की स्थापना द्वारा राष्ट्रव्यापी वैदिक नेटवर्क तैयार करना । श्रौत पादपों का वेदोद्यान विकसित करना।

आचार्य

डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष सहायक आचार्य
8824467198

डॉ. शम्भु कुमार झा
सहायक आचार्य
9166227681

डॉ. नारायण होसमने
सहायक आचार्य
9928157795

ज्योतिष विभाग

वेदवेदाङ‘ संकाय के अन्तर्गत संचालित ज्योतिष विभाग में सिद्धांत ज्योतिष, फलित ज्योतिष, वास्तु शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र एवं एक वर्षीय ज्योतिष और वास्तु के प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित हैं। ज्योतिष विभाग में एक स्वतंत्र वेधशाला स्थापित है, जिसमें एक पूर्णतया स्वचालित टेलीस्कोप तथा एक सामान्य टेलीस्कोप है। इन टेलीस्कोप के माध्यम से छात्रों को प्रायोगिक कक्षाओं में समझाया जाता है ,साथ ही इस विभाग में देश के विभिन्न अक्षांशों पर आधारित लोहे के 10 ग्लोब हैं, जिनसे ज्योतिष सिद्धांत के छात्रों को प्रायोगिक अध्यापन करवाया जाता है। ज्योतिष विभाग में लकड़ी का बना सम्राट् यन्त्र, चन्द्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण के प्रायोगिक अध्ययन के लिए यन्त्र, बाईनाकूलर, संहिता ज्योतिष के प्रायोगिक के लिए वर्षामापक यन्त्र, फलित ज्योतिष के प्रायोगिक के लिए प्लास्टिक निर्मित मानव यन्त्र हैं। ज्योतिष के खगोल एवं भूगोल तथा प्राचीन भारतीय गणित का आधुनिक तथ्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में यह विभाग कार्य कर रहा है।

वर्तमान काल में नवजात बच्चों की जन्मपत्रिका, नामकरणसंस्कार, ग्रह गोचर स्थिति, विवाह हेतु कुंडली मिलान एवं ग्रहों की स्थिति के आधार पर रोग निदान में ज्योतिष का महत्व किसी से छिपा हुआ नहीं है । यह विभाग विद्यार्थियों को ज्योतिष के क्षेत्र में स्वरोजगार के अनेक अवसर भी उपलब्ध करवा रहा है। यहाँ से अध्ययन करने के उपरांत अनेक छात्र देश-विदेश में ज्योतिष के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

ज्योतिष विभाग की कार्य योजनाएँ

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा, 2. ज्योतिष प्रयोगशाला में अत्याधुनिक उपकरण व चित्रों की स्थापना।, 3. स्मार्ट क्लासरूम के माध्यम से नवीनतम तकनीक द्वारा प्रभावी शिक्षण।, 4. विभाग द्वारा ऑनलाइन शॉर्ट टर्म कोर्सेस प्रारम्भ, 5. ऑनलाइन शास्त्रीय ग्रन्थों व पाठ्यक्रमों की शिक्षण सुविधा।, 6. विशिष्ट खगोलीय अवसरों पर प्रायोगिक एवं व्याख्यान।, 7. मासिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार/संगोष्ठी का आयोजन।, 8.ज्योतिष विभाग की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन।, 9.''छात्र-शिक्षक-अभिभावक'' में परस्पर सजीव सम्पर्क तथा प्रोत्साहन/मार्गदर्शन की योजना।, 10.कार्यक्रमों की योजना-संयोजना व संचालन ज्योतिष विभागीय छात्रों द्वारा ही सम्पादित कराकर उनके कौशल एवं व्यक्तित्व के विकास हेतु प्रभावी प्रयास।

आचार्य

डॉ. विनोदकुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष
9414350711

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा
सहायक आचार्य
9829204498

डॉ. शिवाकान्त मिश्र
सहायक आचार्य
7014490556

दर्शन विभाग

दर्शन संकाय के अन्तर्गत समाविष्ट दर्शन विभाग में प्राचीनतम दर्शनशास्त्र की अनेक परम्पराओं का आधुनिक पद्धति से अध्यापन करवाया जा रहा है। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा तथा वेदान्त दर्शन के विभिन्न ग्रंथ पाठ्यक्रम में निर्धारित किए गए हैं।

आस्तिक दर्शनों के साथ ही चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन का विधिवत् अध्ययन तथा अध्यापन करवाया जाना विभाग की विशेषता है। शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त तथा रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत वेदान्त के अध्यापन के साथ ही जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के दार्शनिक ग्रंथों का भी विशेष अध्ययन-अध्यापन एवं गहन शोधकार्य विभाग द्वारा किया जा रहा है।

सृष्टि प्रक्रिया, शाब्दबोध आदि का सरलीकरण करते हुए आर्टिफिशियल लेंग्वेज एवं इंटेलीजेन्स के अध्ययन की प्रगति में सहायता हेतु भी विभाग अनुसंधान कर रहा है। इस विभाग में प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को न केवल प्राचीन भारतीय दर्शनशास्त्र अपितु पाश्चात्त्य दार्शनिकों का भी तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करवाया जाता है।

दर्शन विभाग की कार्य योजनाएं

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा, 2. विभाग में योगासनों के प्रशिक्षण हेतु एक अलग से कक्ष को सुसज्जित करना।, 3. विभाग द्वारा ऑनलाइन शॉर्ट टर्म कोर्स को यथाशीघ्र प्रारम्भ करना।, 4. विभागीय पुस्तकालय की स्थापना करना।, 5. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार/संगोष्ठी का आयोजन।, 6. छात्रों में दर्शन विषयक जागरूकता हेतु चित्र प्रदर्शनी एवं परस्पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन।, 7. छात्रों को प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान तथा वृक्षारोपण आदि के प्रति जागरूक करने हेतु समय-समय पर कार्यक्रमों का आयोजन।

आचार्य

श्री महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेन्द्रदास)
विभागाध्यक्ष-सहायक आचार्य
9214316999

डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी
सहायक आचार्य
9413842030

व्याकरण विभाग

वेद वेदांग संकाय के अन्तर्गत संचालित व्याकरण विभाग में प्राचीन परम्परा के साथ आधुनिक संदर्भ में व्याकरण शास्त्र को लोकोपयोगी बनाने का छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पाणिनि व्याकरण को अष्टाध्यायी क्रम और नवीन पद्धति के आधार पर प्रायोगिक रूप से अध्यापन करवाया जा रहा है। कम्प्यूटर से संस्कृत अनुवाद प्रक्रिया, आधुनिक भाषा के संस्कृत से अंतःसम्बन्ध तथा व्याकरण के गणितीय अध्ययन पर विशेष कार्य किया जा रहा है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए व्याकरण की पृथक् अध्ययन व्यवस्था विद्यार्थियों के लिए की जा रही है। संस्कृत बोलने तथा लिखने में विद्यार्थियों का कौशल बढ़ाने के लिए संस्कृत संभाषण शिविर विभाग द्वारा लगाये जाते हैं। भाषागत प्रक्रियात्मक एवं दार्शनिक व्यापकता के कारण प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण का भाषाशास्त्रीय एवं विभिन्न भाषा-परिवारों के निकट सम्बन्धों के अध्ययन से विश्व में फैले हुए भिन्न-भिन्न मानव प्रजातियों में एकात्मकता के सूत्रों का अन्वेषण कर मानवशास्त्रीय अध्ययन हेतु सुदृढ़ पीठिका तैयार की जा रही है।

व्याकरण विभाग की कार्य योजनाएं

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा 1. त्रिदिवसीय व्याख्यानमाला का आयोजन 2. पन्द्रह दिवसीय शास्त्रीय कार्यशाला 3. राष्ट्रीय सेमिनार 4. अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार 5. छात्रों का विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन5. अगस्त के द्वितीय सप्ताह से प्रविष्ट छात्रों हेतु संस्कृत संभाषण में दक्षता हेतु पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन।, 6. प्रतिमाह छात्रों के शास्त्रीय विषय के विषय-विशेष के ऊपर छात्रों के द्वारा भाषण वाद विवाद सूत्रान्ताक्षरी आदि साहित्यिक गतिविधियों का संचालन।, 7. छात्रों को शास्त्रीय विषय के उद्घोषण हेतु विभागीय प्राध्यापकों द्वारा क्रमशः पाक्षिक व्याख्यान का आयोजन।, 8. सम्पूर्ण सत्र में व्याकरणविभागीय राष्ट्रिय अन्ताराष्ट्रिय सेमिनार एवं व्याख्यानमाला का आयोजन। 9. छात्रों के विभिन्न प्रकृतियों को विकसित करने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।

आचार्य

डॉ. राजधर मिश्र
विभागाध्यक्ष
9314568823

डॉ. दयाराम दास
सहायक आचार्य
9928295878

डॉ. शशिकुमार शर्मा
सहायक आचार्य
9828322255

साहित्य विभाग

संस्कृत और संस्कृति के समुन्नयन एवं समाराधना का आधारस्थल साहित्यशास्त्र के अध्ययन के बाद विद्यार्थियों में विभिन्न मूल्यों का आधान होता है, यह सर्वविदित ही है। काव्यप्रकाश, रसगंगाधर ध्वन्यालोक साहित्य दर्पण जैसे लक्षणग्रंथों के साथ रामायण, महाभारत, रघुवंश, कादम्बरी, मृच्छकटिक, शिशुपालवध जैसे महाकाव्यों के अध्येता विद्यार्थियों में सहज ही वैश्विक, सामाजिक, साहित्यिक व राजनैतिक चेतना जागृत होती है। तमिल, फारसी, अरबी, लैटिन, ग्रीक एवं चीनी भाषा के प्राचीन साहित्यों में प्रतिबिम्बित मानवीय मूल्यों के साथ भारतीय भाषाओं विशेषकर संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठापित मूल्यों का आधुनिक वैश्विक पटल पर सांदर्भिकता के साथ वर्तमान समाज के लिए अपेक्षित मार्गनिर्देशन हेतु काव्यचिन्तन की दिशा में निरन्तर शोध हो रहे हैं।

साहित्य विषय के अध्ययन से अच्छे और बुरे के ज्ञान हेतु नीरक्षीर विवेक की अभूतपूर्व क्षमता विकसित होती है, जो आज के युग में नितान्त अपेक्षित है। साहित्य से समाज को दिशा देने में संस्कृत के साहित्यकारों एवं साहित्यिक आलोचकों की विश्वसाहित्य पटल पर अपनी स्वतंत्र छवि है।

साहित्य संस्कृति संकायान्तर्गत प्रतिष्ठापित साहित्य विभाग में छात्रों के ज्ञान में बहुमुखी अभिवृद्धि हेतु विभागीय आचार्यों द्वारा विशेष कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। साहित्य-पुराण, इतिहास, नाट्यशास्त्र आदि के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध हेतु साहित्य विभाग निरन्तर कार्यरत है। यहाँ से अध्ययनोपरान्त छात्रों को विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

साहित्य विभाग की कार्य योजनाएं

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा 1. विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रमानुसार विभाग शिक्षण एवं ज्ञान के विनियोग में सतत गतिशील रहेगा तथा Ph.D. पाठ्यक्रम द्वारा शोध की प्रवृत्ति एवं गुणवत्ता के अभिवर्धन हेतु प्रतिमाह अतिरिक्त विशेष विश्वविद्यालयस्तरीय शैक्षिक सम्मेलनों का आयोजन करेगा।, 2. साहित्य विभाग संस्कृति एवं संस्कृताधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (UPSC/RPSC/NET-SLET आदि) की तैयारी करने में छात्रों की सहायता हेतु विशेष प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करेगा। 3. साहित्य विभाग द्वारा जन सामान्य के लाभ हेतु रामायण/महाभारत/गीता आदि विषयों पर ई-पाठ्यक्रम का प्रारम्भ किया जाएगा।

आचार्य

डॉ. मधुबाला शर्मा
विभागाध्यक्ष सहायक आचार्य
9928014538

श्री उमेश नेपाल
सहायक आचार्य
9829568913

डॉ. स्नेहलता शर्मा
सहायक आचार्य
9352530162

शिक्षा विभाग

शिक्षा संकाय के अन्तर्गत संचालित शिक्षाशास्त्र विभाग में शिक्षाशास्त्री (बीएड) द्विवर्षीय शिक्षाचार्य (एम.एड) द्विवर्षीय, एवं विद्यावारिधि (पीएच. डी) पाठ्यक्रम NCTE मापदण्डों के आधार पर संचालित हैं। शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में पीएसएसटी द्वारा प्रवेश दिया जाता है। विद्यावारिधि में परीक्षा के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। शिक्षाचार्य (द्विवर्षीय) में प्रवेश पीएसएटी परीक्षा द्वारा दिया जाता है।

शिक्षा विभाग में मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला, भाषा प्रयोगशाला, शैक्षिक तकनीकी प्रयोगशाला तथा 5 हजार से अधिक पुस्तकों से युक्त पृथक् पुस्तकालय है, जिसमें 25 से अधिक मासिक शैक्षणिक पत्रिकाएँ पाठक छात्रों हेतु उपलब्ध हैं। यहाँ नवाचारों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण एवं शिक्षक- प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अनेक कार्यक्रम जैसे स्वच्छता, वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर, वाद-विवाद, निबंध, खेल-कूद प्रतियोगिताओं एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। समाज का उत्कर्ष शिक्षकों के अधीन है, इस ध्येय पर विभाग कार्य कर रहा है।

शिक्षाशास्त्र विभाग से प्रशिक्षित सैंकड़ों विद्यार्थी आज विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ बनाने हेतु प्रयासरत हैं।

शिक्षा विभाग की कार्य योजनाएं

विभाग द्वारा विभागीय समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाएगा 1. विभाग में अत्याधुनिक उपकरणों यथा-स्मार्टक्लास रूम, ऑनलाइन कक्षाओं हेतु नवीनतम तकनीक के कम्प्यूटर एवं लेपटॉप की सुविधा, नवीनतम भाषा प्रयोगशाला आदि प्रारंभ। 2. मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला को नवीनतम परीक्षणों हेतु सुसज्जित करना। 3. छात्रों में कौशल-अभिवृद्धि हेतु विशिष्ट बाह्य प्रशिक्षकों की व्यवस्था। 4. छात्रों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए समय समय पर विभागीय स्तर पर स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था।

आचार्य

डॉ. माताप्रसाद शर्मा
विभागाध्यक्ष
9929773201

डॉ. दिवाकर मिश्र
सहायक आचार्य
9829560632

डॉ. कुलदीप सिंह पालावत
सहायक आचार्य
9460910985

योग विभाग

दर्शन संकाय के अन्तर्गत संचालित योग विज्ञान विभाग युवा वर्ग के लिए उच्च शिक्षा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति के माध्यम से योग शिक्षा का विकास तथा एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर रहा है। वैज्ञानिक पद्धति को ध्यान में रखते हुए समग्र योग चिकित्सा द्वारा समाज में शारीरिक तथा मनोरोगों का उपचार किया जा रहा है। साथ ही युवा वर्ग के लिए रोजगार के विभिन्न आयाम भी खोजे जा रहे हैं। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में सन् 2015 में योग विज्ञान विभाग स्थापित किया गया। योग विभाग का मुख्य उद्देश्य योग और आध्यात्मिक विद्या का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है। योग आध्यात्मिक अनुशासन एवं अत्यन्त सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित ज्ञान है जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह स्वस्थ जीवन की कला एवं विज्ञान है। योग अभ्यास व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक चेतना के साथ एकाकार कर देता है। वर्तमान समय में भौतिकवादी युग के कारण जन सामान्य निरन्तर अवसाद से युक्त है और यही अवसाद लम्बे समय तक बने रहने से व्यक्ति तनाव जनित रोगों व जीवन शैली में नकारात्मक दृष्टिकोण से घिरा रहता है।

इस समस्या के निदान हेतु योग विज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम युवा पीढ़ी के विकास में अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है। योगविज्ञान के पाठ्यक्रमों में प्राचीन योगशास्त्रों के साथ आधुनिक विषय मानव शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान आदि का सम्मिश्रण हैं जिससे योग के उद्देश्य स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर की यात्रा युवा वर्ग को आसानी से स्पष्ट की जा सके।योग विषय के अध्ययन अध्यापन हेतु योगविज्ञान विभाग एवं योग साधना केन्द्र स्थापित हैं।

योग विभाग की कार्य योजनाएं

1. योग विज्ञान विभाग द्वारा इस सत्र में CBCS Pattern लागु कर Ph.D. (योग विज्ञान) के कार्यक्रमों का प्रारंभ करना तथा योग विज्ञान के क्षेत्र में नये वैज्ञानिक शोध करने की योजना है, जिससे शरीर, मन, चेतना के स्तर में योग के विभिन्न आयामों का प्रभाव प्रस्तुत किया जा सके। 2. कोविड-19 जैसे वैश्विक संकट को ध्यान में रखते हुये विभिन्न प्रकार के शोध, वेबिनार का आयोजन करने की योजना है, जिससे छात्र इस संकट काल में शरीर, मन, चेतना, प्राण के स्तर पर आसन, प्राणायाम, ध्यान, क्रिया के प्रभाव को समझते हुए इस प्रकार के संकट काल में अपना योगदान दे सकें। इस संबंध में विशेष कौशल विकास की योजना है। 3. Holistic Healing Center स्थापित करना जिससे देश विदेश में सभी Psychosomatic रोगों से संबंधित लोगों को समग्र स्वास्थ्य के लिए आवासीय सुविधा का लाभ उठा सके।

आचार्य

श्री महेश शर्मा
विभागाध्यक्ष सहायक आचार्य
9214316999

डॉ. शत्रुघ्न सिंह
सहायक आचार्य
9663306972

श्रीमती वन्दना राठौड़
सहायक आचार्य
8762414369

अनुसंधान केन्द्र

प्राचीन वैदिक एवं लौकिक साहित्य में निहित विज्ञान को लोकोपयोगी बनाने हेतु शोधपरक अध्ययन कर उसे प्रकाशित करने हेतु अत्यंत विशाल एवं समृद्ध अनुसंधान केन्द्र स्थापित है जिसमें दुर्लभ ग्रन्थों का संग्रहण, संरक्षण, सम्पादन एवं प्रकाशन का कार्य हो रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा स्वीकृत त्रैमासिक शोध पत्रिका 'वयम' का संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में शोधपत्रों के सहित प्रकाशन का कार्य हो रहा है। प्रायोगिक शोध और व्याख्यान हेतु अनुसंधान केन्द्र में आठ शोधपीठ स्थापित हैं, जिसमें श्रीरामानन्दाचार्य वेदान्त पीठ, सवाई महाराज जयसिंह ज्योतिर्विज्ञान पीठ, वेदवाचस्पति पं. मधुसूदन ओझा वेदविज्ञान पीठ, महामहोपाध्याय गिरधर शर्म चतुर्वेदी व्याकरण पीठ, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री साहित्य पीठ, पद्मभूषण श्री पट्टाभिराम शास्त्री मीमांसा एवं धर्म पीठ, पं. नित्यानन्द शास्त्री आधुनिक संस्कृत पीठ तथा महाकवि ज्ञानसागर जैन दर्शन पीठ निरन्तर संचालित हैं।

अनुसंधान केन्द्र में शोधोपयोगी 850 दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संग्रह है। व्याख्यानमणिमाला, मञ्जुनाथवाग्वैजयन्ती, ज्योत्पत्ति, सांख्यकारिका, काव्यदर्शनविमर्श, वैदिकसंहितासु ज्योतिर्विज्ञानम्, अश्वशास्त्रम्, चिकित्साज्यौतिषम्, Integral World - View of The Vedas आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक शोध केन्द्रों को भी मान्यता प्रदान की गई। अनुसंधान केन्द्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अनुसार विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एवं विद्यावाचस्पति(डी.लिट्) आयोजित करता है।

आचार्य

डॉ. माताप्रसाद शर्मा
निदेशक, अनुसंधान केन्द्र
9929773201

डॉ. संदीप जोशी
सहायक आचार्य
9828792770

राजस्थान-मन्त्र-प्रतिष्ठान

राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान राजस्थान सरकार द्वारा वित्त पोषित तथा जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के अध्यधीन संस्थापित है। भारत के प्राचीनतम समय से लेकर आज तक, ज्ञान-विज्ञान की परिधि में मन्त्रों का महत्व प्रतिपादित है। वेद मन्त्रों के विश्वजनीन होने के बावजूद कदाचित् यहां से अधिक अध्ययन एवं अन्वेषण पाश्चात्य देशों में मन्त्र विज्ञान पर किया जा रहा है। आधुनिक तकनीक से इस प्राचीन विद्या व ज्ञान का लोकहित में संरक्षण कर नई पीढ़ी को परिचित कराना आवश्यक है। अतः जरारासंविवि के संरक्षण में राज्य सरकार के सहयोग से राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान की स्थापना की गई है।

विश्वविद्यालय में मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र विद्या में निहित वैज्ञानिकता एवं उनके प्रभाव हेतु विशेष अनुसंधान के लिए राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान के लिए विशिष्ट प्रकार का भवन का निर्माण करवाया गया है जिसका लोकार्पण 24 सितम्बर, 2018 को श्री प्रकाश जावडेकर, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया। भारतीय प्राचीन वैदिक संस्कृति की धरोहर के रूप में प्रसिद्ध ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद की मन्त्र राशि को अक्षुण्ण बनाये रखना तथा संवर्धन करना प्रतिष्ठान का उद्देश्य है।

वेद की विभिन्न लुप्त हो रही शाखाओं के संरक्षणार्थं तत्तत शाखाओं के विद्वानों के द्वारा उन शाखाओं का ध्वनि मुद्रांकन, वैदिक कर्मों की सफलता परीक्षणार्थ प्रायोगिक रूप से अनुष्ठान आदि के द्वारा वैदिक आचार एवं विचार पद्धतियों का आधुनिक परिवेशानुसार परिष्करण भी राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान के संकल्पित कार्य है। आगम एवं उपवेदभूत आयुर्वेद के समन्वयात्मक प्रायोगिक अध्ययन से चिकित्सा क्षेत्र में भी वैदिक क्रांति लाने हेतु प्रतिष्ठान कटिबद्ध है।

इसी प्रकार विभिन्न तन्त्र एवं आगम की उपासना पद्धतियों को संरक्षित कर उनकी समाज के लिये उपयोगिकता सिद्ध करने हेतु विशिष्ट विद्वन्मण्डली मन्त्र प्रतिष्ठान के सुझाव एवं आग्रह पर कार्यरत हैं। यद्यपि प्रमुख रूप से वेद सम्बन्धी शोध ही प्रतिष्ठान का उद्देश्य है तथापि समाज के विभिन्न क्षेत्र के कार्यरत वेद एवं तन्त्र -आगम के जिज्ञासु जनता के सहायता के लिए राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान के द्वारा डिप्लोमा कोर्स मंत्र साधना पद्धति और चिकित्सा विषयक डिप्लोमा पाठ्यक्रम (Diploma in Mantra Methodology and Theraphy) संचालन हेतु उचित पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है तथा इन पाठ्यक्रमों को योग्य एवं अनुभवी विद्वानों द्वारा संचालित किया जाता है।

राजस्थान मंत्र प्रतिष्ठान की कार्य योजनाएं

1. मंत्र साधना पद्धति एवं चिकित्सा विषयक डिप्लोमा पाठ्यक्रम का प्रारम्भ 2. मंत्रविज्ञान चित्र प्रदर्शनी 3. वेद विज्ञान प्रयोगशाला 4. अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय मासिक संगोष्ठी 5. अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन 6. वेद ग्रन्थागार (ई. ग्रन्थागार) 7. वेदपाठ/व्याख्यान ऑडियो वीडियो रिकॉर्डिंग 8. राष्ट्रीय वेद मंत्र पाठ स्पर्धा (छात्रवर्ग) 9. राष्ट्रीय शास्त्रार्थ सभा (आचार्य वर्ग) 10. वेद-विज्ञान-तकनीकी कार्यशाला 11. विविध विश्वविद्यालयों संस्थानों से एम.ओ.यू.।

प्रभारी

डॉ. शम्भू कुमार झाा
निदेशक
9166227681

विश्वविद्यालय में संचालित नये अध्ययन केन्द्र

महात्मा गांधी अध्ययन केन्द्र

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में श्री महेश शर्मा सहायक आचार्य के संयोजकत्व में महात्मा गांधी अध्ययन केन्द्र संचालित है। महात्मा गांधी के अनुभव एवं उपदेशों द्वारा छात्रों में सगुण एवं शान्तिपूर्ण जीवन यापन की कला का आधान करने के लिए यह केन्द्र प्रतिबद्ध है। यह केन्द्र छात्रों को शान्ति एवं सामाजिक समरसता की समझ के साथ-साथ उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित कर रहा है। इस केन्द्र का लक्ष्य सन्तुलित वैश्विक नागरिक का निर्माण करना होगा, जो शान्तिदूत बनकर विश्व को शान्ति का पाठ पढ़ा सके।

केन्द्र के प्रमुख लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं-

1. महात्मा गांधी के विचारों एवं कार्यों का प्रचार-प्रसार करना।
2. गांधी दर्शन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन ।
3. समसामयिक समस्याओं को सुलझाने हेतु गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता की स्थापना ।
4. विभिन्न दृष्टिकोणों से गांधी जी के विचारों का विश्लेषण।
5. युवावर्ग के विकास हेतु राष्ट्रिय उद्देश्यों के अनुकूल कार्य करना ।
6. धार्मिक सौहार्द, सहिष्णुता, सम्मान, शान्ति एवं एक साथ रहने की भावना को दृढ बनाने हेतु छात्रों को कटिबद्ध एवं दृढसंकल्पित बनाना।
7. गांधी चिन्तन पर अनुसंधान के लिए छात्रों को प्रेरित करना तथा वंचित वर्गों के लिए गांधी जी के कार्यों के प्रति जागरूकता पैदा करना।
8. गांधी जी के व्यक्तित्व पर संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रभाव का अध्ययन।
9. गांधी जी के संबंध में लिखित संस्कृत साहित्य का प्रोन्नयन।
10. शिक्षा के क्षेत्र में गांधीवादी दृष्टिकोण एवं विचार का प्रोन्नयन।
11. गांधी दर्शन की बेहतर समझ के लिए अन्य गांधी अध्ययन केन्द्रों के साथ संबंध स्थापित करना।
12. विश्वविद्यालय के परिसर एवं बाहर गांधीवादी विचारधारा को बढ़ावा देने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करना।

श्री महेश शर्मा
केन्द्र संयोजक

डॉ. अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में श्री महेश शर्मा सहायक आचार्य के संयोजकत्व में डॉ. अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र संचालित है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व एक व्यापक चिन्तक, अर्थशास्त्री, न्यायविद्, संविधानकर्ता, समाज सुधारक, राजनैतिक चिन्तक, पिछडे वर्गों के उन्नायक एवं प्रमुखता से मानवतावादी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका अथक संघर्ष न केवल ब्रिटिश राज को चेताने वाला था किन्तु हिन्दु समाज को भी सामाजिक अन्याय, असमानता, धार्मिक एवं राजनैतिक प्रवृत्तियों के विषय में जागरण कराने वाला था। उनके भाषणों और लेखों में प्रतिबिम्बित न कि सोच और ज्ञान आज भी धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं के समाधान में तर्कसङ्गत उपाय सुलझाते हैं। अम्बेडकर के विचार आज के वैश्वीकरण के युग में और अधिक प्रासङ्गिक हुए हैं।

युवावर्ग तथा अन्य वर्गों में भी डॉ. अम्बेडकर के आदर्श और विचारों के प्रेषण एवं समानतावादी प्रस्थापित सिद्धान्त समाज के रूप में विकसित होने हेतु उनके द्वारा और मूल्यों के विश्लेषण और अनुसन्धान हेतु जरारासंविवि, जयपुर में डॉ. भीमराव अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र की स्थापना की अवश्यकता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय में स्थापित अध्ययन एवं अनुसन्धान विभाग है तथा यह विभाग डॉ. भीमराव अम्बेडकर अध्ययन के क्षेत्र में पाठ्यक्रम चलाएगा। यह केन्द्र सर्टिफिकेट, पी.जी., डिप्लोमा, एम.ए., और पीएच.डी. उपाधि हेतु अध्ययन और अनुसन्धान प्रोग्राम चलाएगा तथा अम्बेडकर दर्शन एवं सम्बन्धित क्षेत्र में एक्सटेंशन कार्यक्रम आयोजित कराएगा।

इस केन्द्र की स्थापना के उद्देश्य है :-

1. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार एवं दर्शन तथा उनकी आधुनिक समाज में प्रासङ्गिकता का अध्ययन।
2. डॉ. भीमराव अम्बेडकर की स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र, समाजवाद सम्बन्धी विचारधारा का भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में योगदान का अध्ययन।
3. विभिन्न सामाजिक- राजनैतिक विचारधाराओं का डॉ. अम्बेडकर के विचार पर प्रभाव का अध्ययन।
4. डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण से, बौद्ध धर्म के विशेष सन्दर्भ में, धर्म के आधुनिक स्वरूपों का अध्ययन।
5. डॉ. अम्बेडकर के संवैधानिक एवं कानूनी विचार तथा आधुनिक समाज में उनकी प्रासङ्गिकता का अध्ययन।

श्री महेश शर्मा
केन्द्र संयोजक

भक्ति अध्ययन केन्द्र

ज.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में सत्र 2022-23 से एक नये अध्ययन केन्द्र के रूप में भक्ति अध्ययन केन्द्र का संचालन किया गया है। इस केन्द्र में पुरा, मध्य एवं आधुनिक कालीन संदर्भों में भक्ति, उसके स्रोत, विकास तथा भक्ति सम्प्रदायों पर अकादमिक अध्ययन, अनुसंधान एवं कार्यशाला तथा संगोष्ठी आयोजन आदि कार्य संचालित किये जायेगे। दक्षिण भारत के आलवार वैष्णव और नयनार शैव परम्पराओं के साथ ही उत्तर भारत में मध्यकाल में प्रस्फुटित भक्ति परम्पराओं पर विस्तार से शोध, श्री रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, विष्णु स्वामी, चैतन्य महाप्रभु के भक्ति प्रस्थान और उनके सम्प्रदायों के सन्तों, भक्तों एवं कवियों पर शोध कार्य सम्पन्न होना है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी रामानन्दाचार्य, उनके द्वादश शिष्य, सगुण परम्परा के भक्त-सन्त-कवि गोस्वामी तुलसीदास, मीरा एवं सूरदास तथा कुम्भनदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अतिरिक्त निर्गुण सम्प्रदायों कबीर, दादू, रामस्नेही, रविदास, धन्ना, पलटू और घीसा पर विस्तृत अनुसंधान एवं व्याख्यान । सिखों की गुरु परम्परा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर अध्ययन, तसव्वुफ और सूफी मत पर केन्द्र कार्य करते हुए भारतीय भक्ति परम्पराओं से इसके तुलनात्मक अध्ययन आदि विशेष कार्य किए जाएगें। भक्ति अध्ययन केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय में इसलिए भी प्रासंगिक था क्योंकि यह विश्वविद्यालय भक्ति सम्प्रदाय के महान् सन्त जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के नाम पर आधारित है।

महेश शर्मा
संयोजक
सहायक आचार्य दर्शन विभाग

महिला अध्ययन केंद्र

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में डा.स्नेहलता शर्मा के संयोजकत्व में महिला अध्ययन केंद्र संचालित है। महिलाओं के सशक्तिकरण एवं समाज एवं राष्ट्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दृष्टिगत करते हुए विश्वविद्यालय में महिला सुरक्षा पर आधारित पाठ्यक्रम का अध्ययन करवाया जाना प्रस्तावित है तथा शोध और प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रम भी आयोजित करवाए जाते हैं।

विश्वविद्यालय में स्थापित महिला अध्ययन केंद्र के माध्यम से महिला समूह में उनके अधिकारों, कर्तव्यों एवं महिलाओं से सम्बंधित कानूनों की भी जानकारी दी जाती है।

यहाँ टीचिंग, ट्रेनिंग, रिसर्च, फील्ड, एक्शन, लाइब्रेरी, पब्लिकेशन, इवैल्यूएशन, सेमिनार, स्पेशल लेक्चर आदि विभिन्न बिन्दुओं को दृष्टिगत करते हुए महिला अध्ययन से जुड़े कार्यक्रमों पर फोकस किया जा रहा है जिससे विश्वविद्यालय की छात्राओं एवं आसपास के क्षेत्र की महिलाओं का चतुर्दिक विकास में विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका हो और उनकी समाज एवं राष्ट्र के प्रति भूमिका एवं सहभागिता मजबूती से उभरकर सामने आ सके। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं एवं कार्यरत महिला कर्मचारियों के साथ आसपास के ग्रामीण इलाकों में भी महिला संबंधी जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। समाज में शोषित और दलित महिलाओं के उत्थान के लिए भी केन्द्र कार्य करेगा।

महिला विदुषियों के विचार एवं दर्शन तथा उनकी आधुनिक समाज में प्रासङ्गिकता का अध्ययन एवं संस्कृतभाषा और स्त्री विचार को सम्प्रकाशित करना भी इस केन्द्र का उद्देश्य है।

1. महिला विदुषियों के विचार एवं दर्शन तथा उनकी आधुनिक समाज में प्रासङ्गिकता का अध्ययन।
2. महिलाओं की स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र, समाजवाद सम्बन्धी विचारधारा का भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में योगदान का अध्ययन।
3. विभिन्न सामाजिक- राजनैतिक विचारधाराओं का महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन।
4. महिलाओं की दृष्टिकोण से धर्म के आधुनिक स्वरूपों का अध्ययन।
5. महिलाओं के संवैधानिक एवं कानूनी विचार तथा आधुनिक समाज में उनकी प्रासङ्गिकता का अध्ययन।
6. गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, शाश्वती, गोधा विश्ववारा और अन्य वैदिक-सामाजिक चिन्तकों के र्शन के साथ आधुनिक स्त्री दर्शन की तुलना।
7. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन पर स्त्री दृष्टिकोण का विश्लेषण।
8. महिलाओं की विचारधारा और दर्शन का विशेष रूप से युवा-युवतियों को और सामान्य रूप से सभी को अध्यापन कराने हेतु पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाना।
9. महिलाओं को शोध, प्रकाशन, ट्रेनिंग, अतिरिक्त क्रियाकलाप आदि करवाना।
10. विशेष रूप से संस्कृत भाषा और स्त्री विचार को सम्प्रकाशित करना।

द

डॉ. स्नेहलता शर्मा
केन्द्र संयोजिका

पुस्तकालय

विश्वविद्यालय में 'श्री अग्रदेवाचार्य ग्रंथागार' के नाम से विशाल एवं समृद्ध पुस्तकालय भारत के प्रमुख पुस्तकालयों में परिगणित है, जिसमें लगभग 43 हजार से अधिक ग्रंथ, 283 ऑडियो-विडियो सीडी और शताधिक नियमित पत्र-पत्रिकाएँ संरक्षित हैं। पुस्तकालय में विद्यार्थी एवं शोधार्थी प्रातः काल से सायंकाल तक शान्त वातावरण में अध्ययन एवं शोधकार्य सम्पादित करते हैं। पुस्तकालय में कम्प्यूटराईज्ड कार्ड से पुस्तकें आवंटित की जाती है।

'ई-ग्रंथालय' नामक सॉफ्टवेयर से विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों को पुस्तकों का आदान-प्रदान किया जाता है तथा पुस्तकों का सूचीकरण कार्य भी इसी सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है। पुस्तकालय में भारतवर्ष के विभिन्न संस्कृत विश्वविद्यालयों, संस्थानों, अकादमियों से संस्कृत विषय में प्रकाशित पुस्तकें संगृहीत हैं, जो इस पुस्तकालय की विशिष्टता है तथा अन्य पुस्तकालयों से इसकी समृद्धता का प्रदर्शन करती हैं। पुस्तकालय को शीघ्र ही सम्पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत तथा वातानुकूलित बनाया है।

ग्रन्थालय के साथ ही यहाँ शोधार्थियों एवं छात्रों हेतु वाचनालय की भी व्यवस्था है। शोध विद्यार्थियों हेतु 20 शोध केबिन उपलब्ध हैं तथा लगभग 250 छात्रों की बैठक व्यवस्था है।

बुक बैंक केन्द्रीय पुस्तकालय में निर्धन छात्र-छात्राओं हेतु बुक बैंक भी स्थापित है। जिसके माध्यम से छात्रों से पुरानी पुस्तकें प्राप्तकर उनका रिकॉर्ड संधारित किया जाता है और आवश्यकतानुसार निर्धन छात्रों को पुस्तकें उपलब्ध करवाई जाती हैं।

प्रभारी

डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी
सहायक आचार्य
9413842030

कम्प्यूटर शाला

नासा द्वारा संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा बताया गया है क्योंकि संस्कृत भाषा के शब्दों का अर्थ वाक्यविन्यास बदलने पर भी नहीं बदलता है तथा कम शब्दों में भी अर्थ पुष्ट होता है। भविष्य में कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा की महत्ता को स्वीकार करते हुए मणिकांचन-संयोग के रूप में विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत के विद्यार्थियों को कम्प्यूटर ज्ञान कराने के लिए 'पीजीडीसीए' डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किया गया है। इसके लिए कम्प्यूटर प्रयोगशाला में प्रोग्रामर और दक्ष प्रशिक्षकों सहित कम्प्यूटर व सहयोगी संसाधन उपलब्ध हैं। आधुनिक समय में कम्प्यूटर की महत्ता को ध्यान में रखते हुए 'पीजीडीसीए' कोर्स संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है तथा विद्यार्थियों में आधुनिकता की अभिवृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत नियमित विद्यार्थियों हेतु 12,000 रुपये के स्थान पर आधे शुल्क में ही पीजीडीसीए - डिप्लोमा की व्यवस्था है।

कम्प्यूटर शिक्षा के लाभ -

यह कोर्स हमें संस्कृत विषय के साथ-साथ एक नवीन कार्य/रोजगार क्षेत्र प्रदान करता है। पी.जी.डी.सी.ए. उत्तीर्ण छात्र को राजकीय सेवाओं में Informatic Assistant (IA) के पद हेतु योग्य माना जाता है। पी.जी.डी.सी.ए. उत्तीर्ण छात्र राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं साथ ही केन्द्रीय विद्यालयों में TGT अध्यापक बनने के लिए उक्त डिप्लोमा की आवश्यकता होती है। छात्र निजी महाविद्यालयों, विद्यालयों में अध्यापक एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर का कार्य करने में सक्षम होते हैं। ये निजी क्षेत्रों में सहायक प्रोग्रामर (Assistant Programmer) का दायित्व भी निभा सकते हैं। पी.जी.डी.सी.ए. अथवा संयुक्ताचार्य में वैकल्पिक विषय कम्प्यूटर के साथ उत्तीर्ण छात्र कम्प्यूटर क्षेत्र में स्वयं का निजी प्रतिष्ठान भी संचालित कर सकते हैं, विभिन्न कलर लैब में, प्राइवेट कम्पनी, लि. फर्म, निजी कार्यालय, कम्प्यूटर में टंकण कार्य करने वाली विभिन्न प्रेस पर कार्य कर सकते हैं।

प्रभारी

श्री कुलदीप तिवाड़ी
कम्प्यूटर प्रोग्रामर
9928700607

राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ

समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करने तथा राष्ट्रीय एकता को क्रियात्मक रूप देने के लिए वि.वि. में राष्ट्रीय सेवा योजना की तीन इकाईयाँ कार्यरत हैं। प्रत्येक इकाई में पचास (50) विद्यार्थी कुल एक सौ पचास (150) विद्यार्थी स्वयं सेवक के रूप में एन.एस.एस. की तीनों इकाईयों के माध्यम से नियमित तथा विशेष कार्यक्रमों को योजनानुसार पूर्ण करने में सक्रिय सहभागिता निभाते है। इस प्रकार वि.वि. का राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ छात्र-छात्राओं को विभिन्न अभिवृत्तियों और आवश्यकताओं के अनुरूप सामाजिक तथा सामुदायिक सेवा का अवसर प्रदान कर उन्हें व्यक्तित्व विकास का सुअवसर प्रदान करता है।

विगत सत्रों की भाँति वर्तमान सत्र में भी 'राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ', शासन सचिवालय, राजस्थान, जयपुर द्वारा निर्दिष्ट गतिविधियों को आयोजित किये जाने के साथ-साथ निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विशिष्ट दिवसों को वि.वि. के एन.एस.एस. प्रकोष्ठ द्वारा यथा सौविध्य मनाया जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय दिवस

क्र.सं.	दिवस	तिथि
1.	राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
2.	राष्ट्रीय मतदाता दिवस	25 जनवरी
3.	गणतंत्र दिवस	26 जनवरी
4.	शहीद दिवस	30 जनवरी
5.	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	08 मार्च
6.	राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस	16 मार्च
7.	विश्व स्वास्थ्य दिवस	07 अप्रेल
8.	विश्व पृथ्वी दिवस	22 अप्रेल
9.	पंचायती राज दिवस	24 अप्रेल
10.	आतंकवाद विरोधी दिवस	21 मई
11.	जैव विविधता दिवस	22 मई
12.	विश्व तम्बाकु निषेध दिवस	31 मई
13.	विश्व पर्यावरण दिवस	05 जून
14.	विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस	12 जून
15.	रक्तदान दिवस	14 जून
16.	राष्ट्रीय योग दिवस	21 जून
17.	विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
18.	विश्व युवा कौशल दिवस	15 जुलाई
19.	भारत छोड़ो आंदोलन दिवस	09 अगस्त
20.	स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
21.	सद्भावना/अक्षय ऊर्जा/ शिक्षा अधिकार दिवस	20 अगस्त
22.	राष्ट्रीय खेल दिवस	29 अगस्त
23.	संस्कृत दिवस (रक्षा बंधन)	30 अगस्त
24.	शिक्षक दिवस	05 सितम्बर
25.	अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	08 सितम्बर
26.	हिन्दी दिवस	14 सितम्बर
27.	राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस	24 सितम्बर
28.	राष्ट्रीय रक्तदान दिवस /अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस	01 अक्टूबर
29.	राष्ट्रीय अहिंसा दिवस	02 अक्टूबर
30.	विश्व खाद्य दिवस	16 अक्टूबर
31.	राष्ट्रीय एकता दिवस	31 अक्टूबर
32.	राष्ट्रीय महिलाओं के विरूद्ध हिंसा विरोधी दिवस	25 नवम्बर
33.	संविधान दिवस	26 नवम्बर
34.	विश्व एड्स दिवस	01 दिसम्बर
35.	विश्व मानवाधिकार दिवस	10 दिसम्बर
36.	राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस	24 दिसम्बर

डॉ. दिवाकर मिश्र
छात्र कल्याण अधिष्ठाता
एवं संयोजक
राष्ट्रीय सेवा योजना
9829560632

डॉ. रामेश्वर नाथ द्विवेदी
कार्यक्रम अधिकारी
इकाई प्रथम
राष्ट्रीय सेवा योजना
9413842030

डॉ. शशि कुमार शर्मा
कार्यक्रम अधिकारी
इकाई द्वितीय
राष्ट्रीय सेवा योजना
9828322255

डॉ. शत्रुघ्न सिंह
कार्यक्रम अधिकारी
इकाई तृतीय
राष्ट्रीय सेवा योजना
9663306972

छात्रावास

छात्रावास - I

छात्रावास - II

मीरा कन्या छात्रावास

प्रभारी

डॉ. शत्रुघ्न सिंह
मुख्य छात्रावास अधीक्षक
9663306972

श्रीमती वन्दना राठौड़
मीरा छात्रावास अधीक्षिका
8762414369

विश्वविद्यालय में छात्रों के आवास के लिए विशाल तथा सुव्यवस्थित दो छात्रावास निर्मित हैं। प्रथम छात्रावास में 72 तथा द्वितीय छात्रावास में 60 कमरे निर्मित हैं। साथ ही दोनों छात्रावासों में 2 पृथक्-पृथक् रसोईघर हैं जहाँ विद्यार्थियों को सात्त्विक, स्वादिष्ट एवं सुपाच्य भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।

विश्वविद्यालय में नियमित रूप से अध्ययनरत छात्राओं के लिए पृथक् से 'मीरा महिला छात्रावास' स्थित है, जिसमें 40 कमरे (अटैच-लैटबाथ) निर्मित हैं। महिला छात्रावास में पृथक् रूप से वार्डन आवास, सीसीटीवी कैमरे तथा 24 घन्टे सिक्योरिटी सिस्टम से छात्राओं की सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। छात्राओं के लिए इन्डोर गैम्स की सुविधा के साथ ही पृथक् भोजनशाला निर्मित है।

विश्वविद्यालय में शीघ्र ही छात्रावासों में छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक् खेलकूद मैदान, मनोरंजन साधन हेतु टीवी तथा सोलर गीजर आदि की व्यवस्था की जा रही है। छात्रावासों में प्रतिदिन छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक व मानसिक सुदृढ़ता के लिए प्रार्थना एवं योगाभ्यास का भी आयोजन किया जाता है।

क्रीडाङ्गण

छात्रों के लिए जिम

विश्वविद्यालय में अध्ययन के साथ ही शारीरिक सौष्ठव को प्रोत्साहित करने के लिए विशाल खेल परिसर निर्मित है, जो विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में महती भूमिका सुनिश्चित करेगा।

विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष बैडमिण्टन, क्रिकेट, फुटबॉल, खो-खो, कबड्डी, हॉकी, वालीबॉल, योग एवं एथलेटिक जैसे आउटडोर एवं इनडोर खेलों की अन्तर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जिसमें छात्र एवं छात्राओं के लिए विभिन्न चरणों में पृथक्-पृथक् प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। प्रतियोगिताओं में विजेता टीम को मोमेण्टो एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर उच्चस्तरीय प्रतियोगिताओं हेतु प्रोत्साहित भी किया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों की शारीरिक सुदृढ़ता के लिए विश्वविद्यालय प्रयासरत है, जिससे विश्वविद्यालय के श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित अन्तर-विश्वविद्यालय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होता है।

अन्य सुविधाएँ

विद्यावारिधि हनुमान मन्दिर

अतिथि–आवास

बैंक

कैन्टीन

औषधालय

वाटर कूलर

सैनेटरी नेपकीन मशीन

स्मार्ट क्लास रूम

प्रवृत्तियाँ

संस्कृत विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास को लक्ष्य करके विश्वविद्यालय में अनेक प्रकार की प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों का आयोजन किया जाता है साथ ही छात्रों को सुविधा देने हेतु विभिन्न प्रकोष्ठों का भी गठन किया गया है जो अधोलिखितानुसार है-

1. **छात्र परामर्श प्रकोष्ठ (Student Counseling Cell)** छात्रों को संस्कृत के क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु शास्त्रों की परम्परागत एवं आधुनिक धारा सम्बन्धी परामर्श एवं मार्गदर्शन योग्य विद्वानों तथा विश्वविद्यालय शिक्षक समिति द्वारा प्रदान किया जाता है।
2. **रोजगार प्रकोष्ठ (Placement Cell)** विश्वविद्यालय के छात्रों को संस्कृत एवं तत्सम्बन्धी अन्य क्षेत्रों में रोजगार प्रदान करने हेतु प्लेसमेन्ट सैल का गठन प्रस्तावित है।
3. **कौशल-विकास प्रकोष्ठ (Skill Development Cell)** विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को विभिन्न प्रकार के कौशलों में दक्ष करने हेतु एक कौशल-विकास सैल का गठन प्रस्तावित है।
4. **प्रतियोगी परीक्षा कक्षा (Competition Exam Class)** विश्वविद्यालय/महाविद्यालय शिक्षकों हेतु निर्धारित पात्रता परीक्षा NET/JRF, SET एवं अन्य प्रशासनिक सेवाओं के लिए उचित मार्गदर्शन हेतु कक्षाओं का परिसर में संचालन किया जाता है।
5. **राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)** विश्वविद्यालय में छात्रों को राष्ट्रीय एवं सामाजिक सरोकारों से जोड़ने एवं प्रकृति व पर्यावरण-संरक्षण आदि महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में छात्रों की रुचि विकसित करने के लिए NSS कार्यक्रम संचालित किया जाता है।
6. **छात्रसंघ निर्वाचन (Students Elections)** छात्रों में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु लिंगदोह समिति की अभिशंसा के अनुसार तथा राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त निर्देशों के अनुरूप नियत तिथि में छात्रसंघ-निर्वाचन सम्पन्न कराया जाता है।
7. **छात्रवृत्तियाँ (Scholarships)** विश्वविद्यालय में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के प्रावधान निम्नांकित हैं-
   - I. समाज कल्याण विभाग की छात्रवृत्ति
     (क) अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों हेतु (ख) दिव्यांग छात्रों हेतु
   - II. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली III. शोध-छात्रवृत्ति (UGC) IV. प्रतिभावान निर्धन छात्राओं हेतु (1 लाख रू.)
8. **छात्र कल्याण संकाय (Faculty of Student's Welfare)** विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के चहुंमुखी विकास एवं विविध गतिविधियों के लिए छात्र कल्याण संकाय स्थापित है।
9. **जनसम्पर्क प्रकोष्ठ (Public Relationship Cell)** विश्वविद्यालय में आयोजित समस्त गतिविधियों एवं अन्य सम्बन्धित कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार हेतु जनसम्पर्क प्रकोष्ठ का गठन किया गया है।
10. **वयम्/प्रवृत्ति पत्रिका (Research Journal/Newspaper)** : विश्वविद्यालय के शोध सम्बन्धी लेखों हेतु **वयम्** शोधपत्रिका तथा विश्वविद्यालय में आयोजित गतिविधियों के प्रकाशनार्थ **प्रवृत्ति** समाचार पत्र का प्रकाशन किया जाता है।
11. **अन्य प्रवृत्तियाँ**
    - (1) **संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी -** विश्वविद्यालय में संस्कृत वाङ्मय में अन्तर्निहित भाषा एवं विज्ञान सम्बन्धित 450 चित्रों का संग्रह के रूप में प्रदर्शनी उपलब्ध है जिसके द्वारा भाषा, शास्त्र व विज्ञान से सम्बन्धित तत्त्वों का प्रचार-प्रसार किया जाता है।
    - (2) **ज्योर्तिविज्ञान प्रयोगशाला -** ज्योतिष विभाग में टेलीस्कोप, स्काई-स्काउट, कम्प्यूटर, ध्रुवयन्त्र, शंकुयन्त्र, प्रोजेक्टर आदि अनेक प्रकार के आधुनिक यन्त्रों उपकरणों चित्रों एवं मॉडल्स से सुसज्जित प्रयोगशाला की स्थापना की गई है जिससे विभाग के छात्र तथा देशभर के आगन्तुक शोध छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।
    - (3) **मनोविज्ञान प्रयोगशाला -** शिक्षाविभाग में मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित है जिसमें शिक्षाशास्त्र एवं मनोविज्ञानशास्त्र सम्बन्धी प्रयोग एवं परीक्षण करवाने हेतु उपयुक्त उपकरण एवं सामग्री सुसज्जित है।
    - (4) **शैक्षणिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियाँ -**

    (I) विशिष्ट-व्याख्यानमाला (II) पुनश्चर्या-पाठ्यक्रम (III) संगोष्ठी/सम्मेलन
    (IV) कार्यशाला (VI) ऑनलाईन वेबिनार (VI) संस्कृत-अंग्रेजी व हिन्दी सम्भाषण अभ्यास एवं परिष्करण कार्य
    (VII) युव महोत्सव

पाठ्यक्रम एवं उपाधियाँ
(Syllabus & Degrees)

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम एवं प्रदान की जाने वाली उपाधियाँ निम्नानुसार हैं :-

अनुसंधान

1. विद्यावाचस्पति (डी.लिट्.)
2. विद्यावारिधि (पीएच्.डी.)

स्नातकोत्तर

1. आचार्य (स्नातकोत्तर) द्विवर्षीय
2. योगविज्ञान आचार्य (एम.एससी./एम.ए.) द्विवर्षीय
3. शिक्षाचार्य (एम.एड.) द्विवर्षीय
4. एम.ए. प्रस्तावित (सस्कृत एवं आधुनिक विषय)

स्नातक

1. शास्त्री (स्नातक) त्रिवर्षीय
2. योगविज्ञान शास्त्री (बी.एससी./बी.ए.) त्रिवर्षीय
3. शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) द्विवर्षीय
4. एकीकृत शास्त्री-शिक्षाशास्त्री (बी.ए.+बीएड) चतुर्वर्षीय (प्रस्तावित)
5. बी.ए.-प्रस्तावित (संस्कृत)
6. शास्त्री एनसीपी-20 के अनुसार प्रक्रियाधीन

डिप्लोमा

1. प्रातःकालीन पीजी डिप्लोमा योग (एकवर्षीय)
2. सायंकालीन डिप्लोमा ज्योतिष (एकवर्षीय)
3. सायंकालीन डिप्लोमा वास्तुशास्त्र (एकवर्षीय)
4. डिप्लोमा कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य (एकवर्षीय)
5. पी.जी.डी.सी.ए. (एकवर्षीय)
6. मंत्र साधना पद्धति और चिकित्सा विषयक डिप्लोमा (एकवर्षीय)
7. पी.जी.डी.एम.इ. (एकवर्षीय)
8. मन्दिर प्रबन्धन डिप्लोमा (एकवर्षीय)

सर्टिफिकेट

1. सर्टिफिकेट कोर्स योग (त्रैमासिक)
2. वास्तु/ज्योतिष प्रमाण पत्र
3. संस्कृत प्रमाणपत्र (त्रैमासिक)
4. मंत्रयोग साधना प्रमाणपत्र (मासिक)
5. सौन्दर्यलहरी तंत्र साधना प्रमाणपत्र (मासिक)

प्रवेश योग्यता

(स्नातक/स्नातकोत्तर/शोधोपाधियाँ)

क्र.सं.	कक्षा/पाठ्यक्रम	शैक्षणिक अर्हता	आयुसीमा	विशेष
1	शास्त्री प्रथम वर्ष	वरिष्ठ उपाध्याय/10+2/तत्समकक्ष परीक्षोत्तीर्ण (10+2 में संस्कृत रहित विद्यार्थियों के लिए संस्कृत डिप्लोमा/विश्वविद्यालय की संस्कृत योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी।)	30 वर्ष अधिकतम महिला अभ्यार्थियों हेतु आयुसीमा में 5 वर्ष की छूट होगी। (गणना का आधार सम्बद्ध सत्र की 01 जुलाई)	(अर्हता परीक्षा में 60 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी सीधा प्रवेश प्राप्त कर सकेगा।)
2	आचार्य पूर्वार्द्ध (Previous) (साहित्य, धर्मशास्त्र, ज्योतिष फलित, पुराणेतिहास, सामान्य दर्शन, रामानन्द दर्शन, रामानुज दर्शन एवं तुलनात्मक दर्शन)	शास्त्री/बी.ए. संस्कृत सहित या तत्समकक्ष संस्कृत परीक्षा उत्तीर्ण	35 वर्ष अधिकतम महिला अभ्यार्थियों हेतु आयुसीमा में 5 वर्ष की छूट होगी। (गणना का आधार सम्बद्ध सत्र की 01 जुलाई)	-
3	आचार्य पूर्वार्द्ध (Previous) सेमेस्टर पद्धति (वेद, व्याकरण, ज्योतिष गणित एवं अन्य विषय)	शास्त्री/परम्परागत तत्समकक्ष परीक्षा सम्बद्ध विषय में उत्तीर्ण	35 वर्ष अधिकतम महिला अभ्यार्थियों हेतु आयुसीमा में 5 वर्ष की छूट होगी। (गणना का आधार सम्बद्ध सत्र की 01 जुलाई)	-
4	योगविज्ञान शास्त्री (बी.ए./बी.एससी.) सेमेस्टर पद्धति	किसी भी विषय से 10+2 परीक्षा उत्तीर्ण	-	-
5	योगविज्ञान आचार्य (एम.ए./एम.एससी.) सेमेस्टर पद्धति	किसी भी विषय में स्नातक या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण	-	-
6	विद्यावारिधि (Ph.D.)	आचार्य/एम.ए. (संस्कृत विषय सहित) परीक्षा 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण	-	इसमें प्रवेश परीक्षा (Pre. Ph.D) के माध्यम से प्रवेश होगा।
7	शिक्षाशास्त्री (B.Ed.)	पी.एस.एस.टी. के नियमानुसार (सेतु अभ्यास कृमः)	-	इसमें प्रवेश PSST के माध्यम से होगा।
8	शिक्षाचार्य (M.Ed.) सेमेस्टर पद्धति	पूर्व शिक्षाचार्य परीक्षा के नियमानुसार	-	इसमें प्रवेश PSAT के माध्यम से होगा।
9	विद्यावाचस्पति (D.Lit.)	पीएच.डी.	-	विश्वविद्यालय द्वारा इस हेतु पृथक् से प्रवेश नियमों का निर्धारण किया गया है।

डिप्लोमा प्रवेश योग्यता :

(क) **कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य उपाख्य (डिप्लोमा)** पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम योग्यता सीनियर सैकण्डरी परीक्षा किसी भी विषय से 40 प्रतिशत प्राप्तांक सहित उत्तीर्ण।

(ख) **वास्तु एवं ज्योतिष के प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट)** पाठ्यक्रम के लिए योग्यता सीनियर सैकण्डरी परीक्षा किसी भी विषय से उत्तीर्ण।

(ग) **कम्प्यूटर में पी. जी. डी. सी. ए. (डिप्लोमा)** पाठ्यक्रम के लिए योग्यता बी. ए. (स्नातक) अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण।

(घ) (I) **संस्कृत प्रमाणपत्र,** के लिए योग्यता किसी भी विषय में 10+2 उत्तीर्ण।
(II) **योग प्रमाण पत्र,** के लिए योग्यता किसी भी विषय में 10+2 उत्तीर्ण।
(III) **योग चिकित्सा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा,** के लिए योग्यता किसी भी विषय में स्नातक या समकक्ष।

स्थान (Seat) विवरण

विश्वविद्यालय में संचालित स्नातक/स्नातकोत्तर/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु निर्धारित स्थान (सीट) अधोलिखितानुसार हैं-

क्र.सं.	विभाग	पाठ्यक्रम			
		शास्त्री प्रथम वर्ष	आचार्य प्रथम वर्ष	डिप्लोमा	प्रमाणपत्र
1.	**वेद पौरोहित्य विभाग** (ऋग्.,यजु., साम., अथर्ववेद)	50	50	75	
	पौरोहित्य धर्मशास्त्र				
2.	**ज्योतिष विभाग**				
	गणित/फलित	50	50		50
	वास्तु				50
3.	**नव्य व्याकरण**	50	50		
4.	**दर्शन विभाग** (न्याय, वेदान्त, वैशेषिक इत्यादि)	50	50		
5.	**जैन दर्शन**	30	30		
6.	**साहित्य विभाग**	50	50		
7.	**पुराणेतिहास**	30	30		
8.	**योगविज्ञान**	60	60	100	30
9.	**शिक्षा विभाग**	100	50		
10.	**कम्प्यूटर पी.जी.डी.सी.ए.**			60	
11.	**संस्कृत**				50
12.	**पी.जी.डी.एम.ई. (शिक्षा)**			50	

नोट :-

1. स्नातक/स्नातकोत्तर कक्षाओं में विषय आरम्भ करने हेतु न्यूनतम छात्र संख्या 05 (पाँच) अपेक्षित है। प्रविष्ट छात्रों को प्रवेश फॉर्म में ही अन्य विषय में प्रवेश के लिए विकल्प देना होगा।
2. ऑनलाइन/ऑफलाइन समस्त डिप्लोमा/प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों के लिए न्यूनतम छात्र संख्या 20 (बीस) अपेक्षित है। विशेष परिस्थिति में सक्षम स्तर पर शिथिलन प्रदान किया जा सकता है।
3. उपरोक्तानुसार उपलब्ध सीटों में राजस्थान सरकार के अनुसार आरक्षण देय होगा।

विभागीय सीटों का आरक्षण विवरण

वेद एवं पौरोहित्य विभाग

(ऋग्, यजु, साम, अथर्ववेद, पौरोहित्य, धर्मशास्त्र)

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
2. आचार्य प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
3. डिप्लोमा	75	8	4	6	3	11	5	3	1	5	2	19	8

ज्योतिष विभाग: गणित/फलित

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
2. आचार्य प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
3. प्रमाण पत्र ज्योतिष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
4. प्रमाण पत्र वास्तु	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

नव्य व्याकरण विभाग

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
2. आचार्य प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

साहित्य विभाग

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
2. आचार्य प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

दर्शन विभाग (न्याय, वेदान्त, वैशेषिक)

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5
2. आचार्य प्रथम वर्ष	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

जैन दर्शन

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	30	4	1	3	1	4	2	1	0	2	1	8	3
2. आचार्य प्रथम वर्ष	30	4	1	3	1	4	2	1	0	2	1	8	3

पुराणेतिहास

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री प्रथम वर्ष	30	4	1	3	1	4	2	1	0	2	1	8	3
2. आचार्य प्रथम वर्ष	30	4	1	3	1	4	2	1	0	2	1	8	3

योग विज्ञान

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
बीए./बी.एस.सी		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. प्रथम वर्ष	60	7	3	5	2	9	4	2	1	4	2	15	6
2. एम.ए. एम.एस.सी प्रथम वर्ष	60	7	3	5	2	9	4	2	1	4	2	15	6
3. डिप्लोमा	100	11	5	8	4	15	6	4	1	7	3	25	11
4. प्रमाण पत्र	30	4	1	3	1	4	2	1	0	2	1	8	3

शिक्षा विभाग

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. शास्त्री /शिक्षाशास्त्री	100	11	5	8	4	15	6	4	1	7	3	25	11
2. आचार्य/शिक्षाचार्य	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

कम्प्यूटर पी.जी.डी.सी.ए.

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. डिप्लोमा	60	7	3	5	2	9	4	2	1	4	2	15	6

त्रैमासिक संस्कृत प्रमाण पत्र

कक्षा	कुल स्थान	SC 16%		ST 12%		OBC 21%		MBC 5%		EWS 10%		General	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1. डिप्लोमा	50	6	2	4	2	7	3	2	1	4	1	13	5

शुल्क विवरण

क्र. सं.	शुल्क मद	पाठ्यक्रम					
		शास्त्री/ आचार्य	योग विज्ञान शास्त्री/ योग विज्ञान आचार्य	कर्मकाण्ड पौरोहित्य डिप्लोमा	पी.जी.डी. वाई.टी	पी.जी.डी.सी.ए. (बाह्य/नियमित/वि.वि. कर्मचारी)	विदेशी छात्र
1	प्रवेश	200	1000	2000	2200	1000	1000
2	परिचय पत्र	100	100	100	100	100	1000
3	विकास	900	2540	0	5000	5000 / 1000 / 2500	6000
4	पुस्तकालय	700 / 900	2000 / 4000	0	0	0	4000
5	छात्रनिधि	500	800	0	0	0	4000
6	छात्रसंघ	300	500	0	0	0	2000
7	क्रीड़ा	400	1000	0	0	0	1000
8	बीमा	50	50	50	50	50	500
9	सैनिक कल्याण कोष सहायता	10	10	10	10	10	100
10	कम्प्यूटर अनुप्रयोग (अनिवार्य)	1000	0	0	0	0	0
11	कम्प्यूटर अनुप्रयोग (वैकल्पिक) प्रतिवर्ष	4000	0	0	0	0	0
12	प्रायोगिक शुल्क (वेद/पौरोहित्य/ज्योतिष हेतु)	300 / 400	2500 / 3500	840	3500	3250 / 2250 / 2625	0
13	लघु शोधप्रबन्ध परीक्षण	0	0	0	0	0	0
14	प्रोजेक्ट प्रस्तुती शुल्क	0	0	0	2000	1000	0
15	शिक्षण शुल्क (ST/SC/OBC/GEN)	800	1500	0	3140	1000	5000
16	शिक्षण शुल्क 50000 आयकर वाले	1500	0	0	0	0	0
17	शिक्षण शुल्क 50000 से अधिक आयकर वाले	2000	0	0	0	0	0
	योग	12760 / 13060	12000 / 15000	3000	16000	11410 / 6410 / 8285	24600

आवेदन पत्र शुल्क :
200/-रू. भारतीय छात्र
1000/-रू. विदेशी छात्र के लिए

अन्य शुल्क

- त्रैमासिक योग प्रमाणपत्र 8000
- स्थानान्तरण शुल्क (टीसी लेते समय) 300
- चरित्र प्रमाणपत्र शुल्क 200

सूचना:

1. कोविड़-19 वैश्विक महामारी को देखते हुए विश्वविद्यालय ने यह निर्णय लिया कि विश्वविद्यालय में अध्ययनरत एवं नये प्रवेश लेने वाले अभ्यर्थियो के परिवार के कमाऊ व्यक्ति यथा माता या पिता का कोरोना से निधन हो जाता है तो ऐसे विद्यार्थियों का शिक्षण शुल्क जब तक वह विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रहेगा माफ रखा जावेगा। यह शुल्क माफी स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम (Self Financing Course) के अलावा सभी पर लागू रहेगा।

Online Course

विश्वविद्यालय में संचालित online पाठ्यक्रम

	Name of Course	Duration	Seats	Qualification	Fees	Age	समन्वयक/ नियोजक
1.	P.G. Diploma in Gandhian Studies	1 Year	40	Graduate 40%	22000/-	No	श्री महेश शर्मा
2.	P.G. Diploma in Ambedkar Studies	1 Year	40	Graduate	22000/-	No	डॉ. महेश शर्मा
3.	P.G. Diploma in Women's Studies	1 Year	40	Graduate 40%	22000/-	No	डॉ. स्नेहलता शर्मा
4.	P.G. Diploma in Mantra Methodology & Theraphy	1 Year	20	12th 40%	22000/-	No	डॉ. विनोद कुमार शर्मा
5.	Post Diploma in French	1 Year	20	Graduate	22000/-	No	श्री महेश शर्मा
6.	Diploma in French	1 Year	20	12th	22000/-	No	श्री महेश शर्मा
7.	Diploma in German	1 Year	20	12th	22000/-	No	डॉ. शत्रुघ्न सिंह
8.	Post Diploma in German	1 Year	20	Graduate	22000/-	No	डॉ. शत्रुघ्न सिंह
9.	P.G. Diploma in Journalism & Mass Communication	1 Year	40	Graduate 40%	22000/-	No	श्री महेश शर्मा
10.	P.G. Diploma in Manuscriptology & Paleography	1 Year	40	Graduate	22000/-	No	डॉ. शशि कुमार शर्मा
11.	Diploma in mantra Methodalogy & Therapy	1 Year	50	12th	4000/-	No	डॉ. नारायण होसमने
12.	Certificate Course in French	6 Months	20	12th	12000/-	No	श्री महेश शर्मा
13.	Certificate Course in German	6 Months	20	12th	12000/-	No	डॉ. शत्रुघ्न सिंह
14.	Short Term Course Sabdanushasanam	6 Months	40	12th	12000/-	No	डॉ. शशि कुमार शर्मा
15.	Medical Astrology Diploma Course	6 Months	20	12th	15000/-	No	डॉ. विनोद कुमार शर्मा
16.	Web Designing Course	4 Months	20	12th	8000/-	No	श्री कुलदीप तिवारी
17.	DTP	4 Months	20	12th	8000/-	No	श्री कुलदीप तिवारी
18.	Office Automation	3 Months	20	12th	6000/-	No	श्री कुलदीप तिवारी
19.	Bhartiya Darshan	3 Months	20	12th	6000/-	No	डॉ. रामेश्वर नाथ द्विवेदी
20.	Short Term Course in Texual Criticism	3 Months	20	Graduate	6000/-	No	डॉ. शशि कुमार शर्मा
21.	Jyotish Pravesh Certificate Course	3 Months	20	10th	6000/-	No	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
22.	Vastu Pravesh Certificate Course	3 Months	20	10th	6000/-	No	डॉ. शिवाकान्त मिश्र
23.	Short Term Course in Gram Porohitya Training	2 Months	30	12th	4000/-	No	डॉ. नारायण होसमने
24.	E-Certificate Course in Educational Research	2 Months	40	B.Ed./ M.Ed. M.Phil./Ph.D/ Passed/Appeard	4000/-	No	डॉ. माता प्रसाद शर्मा
25.	Advance Yoga Course	1.5 Months	20	12th	3000/-	No	श्रीमती वन्दना राठौड़
26.	Short Term Course in Ancient Indian Script (Sarda Script)	1 Months	20	Graduate	2000/-	No	डॉ. शशि कुमार शर्मा
27.	Short Term Course in Sahitya	1 Month	20	12th	2000/-	No	डॉ. उमेश नेपाल
28.	Mantra Sadhna Course Certificate	2 Month	30	12th	1000/-	No	डॉ. नारायण होसमने
29.	Tantra Sadhna Certificate	1 Month	30	12th	1000/-	No	डॉ. नारायण होसमने

प्रवेश शुल्क विवरण

S.No.	Class	Course Type	Female	Male (SC/ST/Income Tax not giving OBC/General	Male (Income Tax giving not more than 50,000 OBC/General)	Male (Income Tax giving more than 50,000 OBC/General)
1	Shastri 1st Year (Sahitya, Vyakaran, Darshan, Jain Darshan, Purana Itihas)	Shastri	550	3960	4660	5160
2	Shastri 2nd Year (Sahitya, Vyakaran, Darshan, Jain Darshan, Purana Itihas)	Shastri	550	4960	5660	6160
3	Shastri 3rd Year (Sahitya, Vyakaran, Darshan, Jain Darshan, Purana Itihas)	Shastri	550	3960	4660	5160
4	Shastri 1st Year (Ved/Jyotish)	Shastri	550	4260	4960	5460
5	Shastri 2nd Year (Ved/Jyotish)	Shastri	550	5260	5960	6460
6	Shastri 3rd Year (Ved/Jyotish)	Shastri	550	4260	4960	5460
7	Shastri Yoga (Complete Course)	Shastri	12000	12000	12000	12000
8	Acharya 1st Year (Sahitya, Vyakaran, Darshan, Dharamshastra, Jain Darshan, Purana Itihas)	Acharya	550	4160	4860	5360
9	Acharya 2nd Year (Sahitya, Vyakaran, Darshan, Dharamshastra, Jain Darshan, Puranetihas)	Acharya	550	4160	4860	5360
10	Acharya 1st Year (Ved/Porohitya/Jyotish)	Acharya	550	4560	5260	5760
11	Acharya 2nd Year (Ved/Porohitya/Jyotish)	Acharya	550	4560	5260	5760
12	Acharya Yoga (Complete Course)	Acharya	15000	15000	15000	15000

क्रं.सं.	डिप्लोमा कोर्स	बाह्य	नियमित	वि.वि. कर्मचारी
1	Diploma (Computer-PGDCA)	11410	6410	8285
2	Diploma (Karamkand/Porohitya)	3000	3000	3000
3	Diploma (Yoga)	16000	16000	16000
4	Certificate (Yoga)	8000	8000	8000
5	Certificate (Sanskrit)	8000	8000	8000
6	Certificate (Vastu)	4000	4000	4000
7	Certificate (Jyotish)	4000	4000	4000
8	PGDME (Shiksha)	5000	5000	5000
9	Diploma in Temple Management	5000	5000	5000

प्रवेश नियम

1. **नियमों की पालना :–** विश्वविद्यालय में नियमित विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को विवरणिका में उल्लिखित प्रवेश नियमों का पालन करना अनिवार्य है।
2. **गणवेश की अनिवार्यता :–** नियमित प्रविष्ट छात्र/छात्राओं को विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित गणवेष धारण करके ही अध्ययन करना होगा (छात्रों हेतु सफेद कुर्ता–धोती /पायजामा, सफेद पेन्ट–शर्ट तथा छात्राओं हेतु मेहरून साड़ी/सफेद सलवार–कुर्ता तथा मेहरून चुन्नी)।
3. **उपस्थिति की अनिवार्यता :–** नियमित प्रविष्ट विद्यार्थी की प्रत्येक विषय में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है। इसके अभाव में छात्र परीक्षा से वंचित किया जाएगा।
4. **अनुशासन की अनिवार्यता :–**विद्यार्थियों का अनुशासन में रहना अनिवार्य है, अनुशासनहीनता की स्थिति में छात्र पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।
5. **संस्कृत सम्भाषण की अनिवार्यता :–**विश्वविद्यालय में प्रविष्ट विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में संभाषण करना अनिवार्य है तथा संस्कृत विषयों के अध्ययन–अध्यापन का माध्यम संस्कृत भाषा ही होगा।
6. शैक्षणिक सत्र 2023–24 में प्रविष्ट छात्रों का अध्यापन कार्य पाठ्यक्रम के नियमानुसार होगा। विश्वविद्यालय में वरिष्ठ उपाध्याय अथवा उसके समकक्ष उपाधि प्राप्त छात्र के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेकर शास्त्री तृतीय वर्ष पर्यंत सेमेस्टर पद्धति में अध्ययन करेगें एतदर्थ उन्हें शास्त्री उपाधि प्रदान की जाएगी । यदि विद्यार्थी तीन वर्ष अध्ययनोपरान्त आगे अध्ययन नहीं करना चाहे तो उन्हें शास्त्री उपाधि प्रदान की जाएगी । 3 वर्षीय शास्त्री उपाधि धारक विद्यार्थी आचार्य प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु पात्र होगा ।
7. **प्रवेश में वरीयता सम्बन्धी प्रावधान :–**
   (I) योग्यता सूची में दो विद्यार्थियों के अंकों का प्रतिशत समान होने पर आवेदित विषय में अधिक प्राप्तांक वाले छात्र को वरीयता दी जायेगी।
   (II) वरिष्ठोपाध्याय अथवा सीनियर सैकण्डरी/शास्त्री की पुनः परीक्षा देकर अंकवृद्धि करने वाले छात्र के बढ़े हुए अंक योग्यता निर्धारण में विचारणीय होंगे। एतदर्थ नवीन अंकतालिका भी संलग्न करनी होगी।
   (III) पूरक परीक्षा योग्य घोषित विद्यार्थी प्रवेश की अन्तिम तिथि तक अस्थायी प्रवेश ले सकता है किन्तु उत्तीर्ण होने पर ही नियमित छात्र के रूप में प्रवेश दिया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन करवाने वाले विद्यार्थी पर भी उक्त नियम लागू होगा। अन्य विश्वविद्यालय के छात्र जिनके परिणाम घोषित नहीं हुए, वे स्थान रिक्त रहने पर अस्थायी प्रवेश ले सकेगें।
   (IV) अर्हकारी परीक्षा में पूरक परीक्षा के योग्य घोषित अभ्यर्थी की पात्रता तथा योग्यता स्थान–निर्धारण के लिए पूरक परीक्षा के विषय/पेपर अभ्यर्थी के प्राप्तांकों की अपेक्षा न्यूनतम उत्तीर्णांक जोड़े जाएंगे।
   (V) राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की वेदविभूषण परीक्षा आधुनिक विषयों के साथ उत्तीर्ण छात्र केवल वेद विषय में प्रवेश ले सकेगा।
   (VI) वेद, पौरोहित्य एवं पूर्व मीमांसा में प्रवेशार्ह छात्रों की मौखिक परीक्षा लेकर ही प्रवेश दिया जा सकेगा।
8. **अन्तराल सम्बन्धी प्रावधान :–**
   (I) विद्यार्थी के योग्यता परीक्षा में नियमित विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट होकर उत्तीर्ण होने पर वह किसी उचित कारण से नियमित विद्यार्थी के रूप में अगली परीक्षा में उपस्थित नहीं होता है तो उसे आगामी सत्र हेतु नियमित प्रवेश योग्य माना जाएगा।
   (II) यदि कोई विद्यार्थी किसी कारणवश योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सत्र के पश्चात् वाले सत्र में किसी भी महाविद्यालय में नियमित अध्ययन नहीं करता है तो ऐसे छात्र को प्रवेशावेदन पत्र के साथ नोटेरी पब्लिक से प्रमाणित शपथ पत्र प्रस्तुत करना होगा।
   (III) यदि इस अन्तराल की अवधि में वह किसी अन्य विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का नियमित विद्यार्थी रहा है अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय का स्वयंपाठी विद्यार्थी रहा है तो उसे शपथ पत्र में अंकित करना होगा कि उसे सम्बन्धित महाविद्यालय/विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश अथवा परीक्षा के लिए अयोग्य घोषित नहीं किया गया है। अन्य संस्था में नियमित अध्ययन की स्थिति में संस्था प्रधान द्वारा जारी चरित्र प्रमाण पत्र भी प्रवेशावेदन पत्र के साथ प्रस्तुत करना होगा।
   (IV) शास्त्री/आचार्य कक्षाओं में प्रवेश हेतु अर्हकारी परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त चार शैक्षणिक सत्र से अधिक अन्तराल व्यतीत होने के पश्चात् आवेदक विद्यार्थी को किसी भी परिस्थिति में नियमित प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। आचार्य प्रथम वर्ष के उपरान्त भी द्वितीय वर्ष करने में दो वर्ष की अवधि का अन्तराल मान्य होगा।
9. **द्वितीय स्नातकोत्तर सम्बन्धी प्रावधान :–** किसी भी संस्था या विश्वविद्यालय में एक बार आचार्य/स्नातकोत्तर करने के बाद किसी भी अन्य विषय में आचार्य करने की अनुमति होगी। विशेष परिस्थिति में अंतिम निर्णय विभागीय प्रवेश समिति का होगा। द्वितीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में

प्रविष्ट विद्यार्थी के छात्रसंघ चुनाव लड़ने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध रहेगा।

10. **स्नातक कक्षा में मुख्य विषय के साथ एक अतिरिक्त विषय में परीक्षा सुविधा:–**विश्वविद्यालय अथवा तत्सम्बद्ध महाविद्यालयों में शास्त्री अध्ययनरत विद्यार्थी किसी एक और आधुनिक या शास्त्रीय विषय में प्रवेश हेतु परीक्षा दे सकता है जिसमें प्रायोगिक ना हो, उक्त विषयक परीक्षा पृथक् से होगी तथा शुल्क भी पृथक् से लिया जाएगा और विद्यार्थी उस विषय में स्वयंपाठी होगा।

11. **आरक्षण सम्बन्धी प्रावधान :–**

(I) विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए केन्द्र सरकार/राजस्थान राज्य सरकार के आरक्षण नियम लागू होंगे।

(II) विशिष्ट उपलब्धियों एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों में विशिष्ट स्थान अर्जित करने वाले छात्र/छात्राओं के लिए नियमानुसार प्रवेश हेतु बोनस अंक देकर वरीयता सूची का निर्माण किया जाएगा।

(III) स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश हेतु (अ) त्रिवर्षीय रक्तदान प्रमाण पत्र–1 प्रतिशत अंक (ब) साक्षरता अभियान में सहयोग प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर 0.5 प्रतिशत अंक (स) महाविद्यालयों के बुक बैंक में लगातार 3 वर्ष तक पुस्तकें जमाकर प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने पर 0.5 प्रतिशत अंक का लाभ दिया जायेगा।

12. **विदेशी छात्रों के प्रवेश सम्बन्धी प्रावधान :– (Admission Rules for Foreign Students)**

(I) Foreign Nationals, who want to seek admission in Shastri / Acharya course of university, have to get admission in the Bridge course (in Sanskrit) of one year duration.

(II) After passing the Bridge course, He/She may be given admission into Shastri in any of the Departments, provided the candidate has passed the 12th exam or equal to that of the country concerned.

(III) After passing the Bridge course, He/She may be given admission into Acharya in Sahitya or Dept. of Samanya Darshana only, provided the candidate has passed the Degree or equal to that of the country concerned.

(IV) Equivalence of their Degrees will be decided by the International Students' Cell constituted by the university.

(V) Medium of the Examination will be either Sanskrit/Hindi/English.

(VI) Fee structure for Foreign Nationals will be five times greater than the fees prescribed for Indian Nationals, which is given in the prospectus. Fee structure for Bridge course will be five times greater than the fees prescribed for Indian Nationals for Shastri first year course.

(VII) Applications can be downloaded from University's website www.jrrsanskrituniversity.ac.in. Filled in applications can be sent to the Director (Campus Studies), Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University, Madau, Bhankrota, Muhana Link Road, Jaipur (Raj.) - 302026

13. **संयुक्ताचार्य/शास्त्री/आचार्य (सेमेस्टर पद्धति) कक्षाओं में नवीन प्रवेश हेतु निर्धारित तिथियाँ–**

(I)	विज्ञापन	18.06.2023
(II)	आवेदन प्रक्रिया प्रारम्भ	19.06.2023
(III)	आवेदन पत्र भरने की अंतिम तिथि	18.07.2023
(IV)	छात्रों हेतु शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथि	18.07.2023
(V)	दिनांक 19.06.2023 से 05.07.2023 तक प्रविष्ट छात्रों की कक्षा आरम्भ तिथि	05.07.2023
(VI)	100/- रुपये विलम्ब शुल्क सहित प्रवेश शुल्क जमा करने की अन्तिम तिथि	31.07.2023

नोटः- विभागीय प्रवेश समिति की अनुशंषा पर निदेशक, शैक्षणिक परिसर को प्रवेश तिथियों में संशोधन / परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

14. **आवेदन पत्र प्राप्तिस्थल :**

(II) **website-www.jrrsanskrituniversity.ac.in**

15. छात्रों को परिचय–पत्र प्रवेश की अन्तिम तिथि के 15 दिनों के पश्चात दिये जाएंगे।

16. **विशेषाधिकार सम्बन्धी प्रावधान :–** छात्रों के प्रवेश सम्बन्धी समस्त मामलों में निर्णयों का अधिकार प्रवेश परामर्श समिति के पास सुरक्षित होगा तथा विशेषाधिकार माननीय कुलपति महोदया के पास सुरक्षित रहेगा।

नोट : विशेष परिस्थिति में प्रशासनिक स्वीकृति (माननीय कुलपति महोदय) के बाद आवश्यक होने पर प्रवेश प्रक्रिया की स्वीकृति दी जा सकती है।

विश्वविद्यालय विकास हेतु गतिमान योजनाएँ :

1. विश्वविद्यालय में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का निर्माण पूर्ण कर लोकार्पण करवाना।
2. विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन एवं ऑनलाइन वेबिनार्स का आयोजन।
3. विश्वविद्यालय कम्प्यूटर लैब का आधुनिकीकरण करना।
4. छात्रों की शैक्षिक रूचि में अभिवृद्धि हेतु महाविद्यालय एवं राज्यस्तरीय शास्त्रीय, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा प्रतिस्पर्धाओं का क्रमशः निर्धारित समयानुसार आयोजन।
5. विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों पर राष्ट्रस्तरीय व्याख्यान-माला एवं कार्यशाला का आयोजन।
6. छात्रों के आवासीय व्यवस्था छात्रावास में सभी सुविधाओं के साथ भोजनादि की सुचारू व्यवस्था के साथ सत्रारम्भ से ही छात्रावास का संचालन।
7. परिसरीय छात्रों में शैक्षणिक वातावरण एवं संस्कृतमय वातावरण हेतु पाक्षिक/मासिक भाषण-शास्त्रार्थ अन्त्याक्षरी-क्रीड़ा आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन।
8. क्रीड़ा व्यवस्था को व्यवस्थित रूप देने हेतु क्रीड़ा शिक्षक (शारीरिक शिक्षक) की नियुक्ति।
9. समस्त शैक्षिक संकायों में निर्धारित विषय विशेष पर तत्तद् अध्यापकों द्वारा शोधपूर्ण लेखों को संग्रहीत कर उन पर विद्वच्चर्चा के बाद पत्रिका का प्रकाशन कर समस्त विश्वविद्यालय में प्रेषण।
10. सभी विभागों को शैक्षणिक एवं भौतिक दृष्टि से विकसित किये जाने के क्रम में उच्च स्तरीय एक विषय-विशेषज्ञ समिति के द्वारा तत् तद् कार्यों के संचालन हेतु प्रभारी की नियुक्ति कर समयबद्ध कार्यों का संचालन।
11. भारतीय प्राचीन इतिहास की प्रासंगिकता में सामान्य विश्वविद्यालयों में भी अधिक होने के कारण अपने विश्वविद्यालय में पुराणेतिहास विषय का अध्यापन प्रारम्भ किया जाना प्रस्तावित है। साथ ही आधुनिक विषय हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, पर्यावरण, कम्प्यूटर एवं संगीत आदि ऐच्छिक विषयों को समुचित अध्यापन हेतु अध्यापकों की नियुक्ति भी प्रस्तावित है।
12. विश्वविद्यालय के गोद लिये हुये गाँव के सार्वजनिक स्थानों पर योग एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का कार्यक्रम समय-समय पर किया जा रहा है।
13. विश्वविद्यालय परिसर में संविधान पार्क, हर्बल गार्डन, नक्षत्रवाटिका, श्रोतस्मार्त यज्ञशाला, ऑडिटोरियम प्रस्तावित स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, छात्रपरामर्श केन्द्र, छात्रों के लिए व्यायाम शाला, पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र इत्यादि का निर्माण तथा विश्वविद्यालय में विद्यमान वन्य क्षेत्र (खाली) को आर्थिक दृष्टि से विकसित करना है।
14. विश्वविद्यालय को यू.जी.सी. द्वारा NAAC, NIRF करवाना तथा विश्वविद्यालय को स्मार्ट युनिवर्सिटी बनाकर ई-लर्निंग, राष्ट्रस्तरीय, एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करवाना।
15. सौर ऊर्जा सयंत्र स्थापित करना। वाटर हार्वेस्टिंग का निर्माण करना।
16. आयुष मंत्रालय, भारत सरकार से एम. ओ. यू. कर प्राकृतिक चिकित्सा, पंचकर्म केन्द्र स्थापित करना। राधाकृष्णन् आयुर्वेद वि.वि. से एम.ओ.यू. कर आयुर्वेद केन्द्र की स्थापना करना ताकि देश-विदेश के लोग सकारात्मक स्वास्थ्य के लिए योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ ले सके।
17. स्किल डवलपमेंट विश्वविद्यालय से एम.ओ. यू. के अनुसार स्किल डवलपमेन्ट कार्यक्रम संचालित करना।
18. रेडक्रॉस सोसायटी से एम.ओ.यू. कर स्वास्थ्य परीक्षण तथा रक्त दान शिविर इत्यादि का आयोजन कराया जाना।
19. देहली तकनीकी विश्वविद्यालय से एम.ओ.यू. कर सभी रिकॉर्ड्स का तथा पाण्डुलिपियों इत्यादि का डिजिटाईजेशन किया जाना।
20. इण्टरनेशनल Habitation केन्द्र का निर्माण करना।
21. केन्द्रीय पुस्तकालय का डिजिटाईजेशन का कार्य करवाया जायेगा।
22. शोधार्थियों को नियमित डी.लिट. उपाधि प्रदान करना।

शैक्षणिक पंचांग - सत्र 2023-24

क्र. सं.	विवरण	दिनांक
1.	नामांकन हेतु विज्ञापन	19.06.2023
2.	सत्रारम्भ/अध्ययन आरम्भ	03.07.2023
3.	गुरु पूर्णिमा	03.07.2023
4.	संस्कृत दिवस समारोह/रक्षाबंधन	30.08.2023
5.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	15.08.2023
6.	दीक्षान्त समारोह	माह दिसम्बर
7.	साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सप्ताह	21.08.2023 - 26.08.2023
8.	राष्ट्रीय शिक्षक दिवस	05.09.2023
9.	हिन्दी दिवस	14.09.2023
10.	नियमित छात्रों द्वारा परीक्षा आवेदन पत्रपूर्ति	दिसम्बर प्रथम सप्ताह में
12.	शीतकालीन अवकाश	**25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2023**
13.	ईसवीय नववर्ष	01.01.2024
15.	गणतंत्र दिवस समारोह	26.01.2024
16.	जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती	02.02.2024
17.	विश्वविद्यालय स्थापना दिवस	06.02.2024
18.	वार्षिक परीक्षा	15.03.2024
20.	ग्रीष्मकालीन अवकाश	**1 मई - 30 जून, 2024**
21.	अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	21.06.2024

टिप्पणी : उपर्युक्त तिथियों का निर्धारण संशोधन अथवा परिवर्तन यू.जी.सी./विश्वविद्यालय/राज्य सरकार के निर्देशानुसार होंगे। शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षाचार्य कक्षाओं की व्यवस्था राज्य सरकार/एन.सी.टी.ई के निर्देशानुसार होगी।

समितियाँ

शैक्षणिक सत्र 2023-24 के सफल संचालन हेतु गठित समस्त समितियों के संयोजक, निदेशक, शैक्षणिक परिसर डॉ. विनोद कुमार शर्मा को बनाया गया है।

क्र. सं.	समिति का नाम	सदस्यो का नाम एवं विवरण	पद नाम	मोबाइल नम्बर
1.	समेकित केन्द्रीय प्रवेश समिति	डॉ. शशि कुमार शर्मा	सह संयोजक	9828322255
		समस्त विभागाध्यक्ष	सदस्य	
2.	प्रवेश विज्ञापन प्रकाशन समिति	डॉ राजधर मिश्र	सह संयोजक	9314568823
		डॉ. शिवाकान्त मिश्र	सदस्य	9413840157
		डॉ. शम्भु कुमार झा	सदस्य	9166227681
3.	छात्र परामर्श केन्द्र समिति	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा	सहायक आचार्य (ज्योतिष) सह संयोजक	9829204498
		डॉ. स्नेहलता शर्मा	सहायक आचार्य (साहित्य)-सदस्य	9352530162
		डॉ. दिवाकर मिश्र	सहायक आचार्य (शिक्षा)-सदस्य	9829560632
		डॉ. देवेन्द्र कुमार	सहायक आचार्य (वेद) -सदस्य	8824467198
		डॉ. कुलदीप सिंह	सहायक आचार्य (शिक्षा)-सदस्य	9460910985
		डॉ. नारायण होसमने	सहायक आचार्य (वेद) -सदस्य	9928157795
2.	अनुशासन समिति	डॉ. माताप्रसाद शर्मा	सह आचार्य (शिक्षा)-सह संयोजक	9929773201
		डॉ. स्नेहलता शर्मा	सहायक आचार्य (साहित्य)-सदस्य	
		डॉ. शम्भु कुमार झा	सहायक आचार्य (वेद)- सदस्य	9166227681
		डॉ. कैलाश चन्द शर्मा	सहायक आचार्य (ज्योतिष)-सदस्य	9829204498
		डॉ. मधुबाला शर्मा	सहायक आचार्य (साहित्य)-सदस्य	9928014538
		डॉ. संदीप जोशी	सहायक आचार्य (अनुसंधान) सदस्य	9828792770
		डॉ. शत्रुघ्न सिंह	सहायक आचार्य (योग)- सदस्य	9663306972
3.	छात्रावास समिति	डॉ. शत्रुघ्न सिंह	सहायक आचार्य (योग) मुख्य छात्रावास अधीक्षक एवं छात्रावास अधीक्षक - सह संयोजक	9663306972
		श्रीमती वन्दना राठौड़	सहा. आचार्य (योग) मीरा छात्रावास अधीक्षिका-सदस्य	8762414369
4.	रैगिंग निरोधक समिति	डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी	सहायक आचार्य (दर्शन)-सह संयोजक	9413842030
		डॉ. शिवाकान्त मिश्र	सहायक आचार्य (ज्योतिष)-सदस्य	9413840157
		डॉ. मधुबाला शर्मा	सहायक आचार्य (साहित्य)-सदस्य	9928014538
		डॉ. शशि कुमार शर्मा	सहायक आचार्य (व्याकरण)-सदस्य	9828322255
		श्री महेश शर्मा	सहायक आचार्य (दर्शन)-सदस्य	9214316999
		श्रीमती वन्दना राठौड़	सहा. आचार्य (योग)-सदस्य	8762414369
5.	छात्र कल्याण अधिष्ठाता	डॉ. दिवाकर मिश्र	सहायक आचार्य (शिक्षा)	9829560632

विभागीय प्रवेश समिति

क्र. सं.	समिति का नाम	समिति के पदाधिकारीगण	पद नाम	मोबाइल नम्बर
1.	**साहित्य विभाग**	डॉ. मधुबाला शर्मा	विभागाध्यक्ष	9928014538
		डॉ. स्नेहलता शर्मा	सहायक आचार्य	9352530162
2.	**व्याकरण विभाग**	डॉ. राजधर मिश्र	विभागाध्यक्ष	9314568623
		डॉ. दयारामदास	सहायक आचार्य	9928295878
		डॉ. शशि कुमार शर्मा	सहायक आचार्य	9828322255
3.	**ज्योतिष विभाग**	डॉ. विनोद कुमार शर्मा	विभागाध्यक्ष	9414350711
		डॉ. कैलाश चन्द शर्मा	सहायक आचार्य	9829204498
		डॉ. शिवाकान्त मिश्र	सहायक आचार्य	7014490556
4.	**वेद विभाग**	डॉ. देवेन्द्र कुमार	विभागाध्यक्ष	8824467198
		डॉ. शम्भु कुमार झा	सहायक आचार्य	9166227681
		डॉ. नारायण होसमने	सहायक आचार्य	9928157795
5.	**दर्शन विभाग**	श्री महेश शर्मा	विभागाध्यक्ष	9214316999
		डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी	सहायक आचार्य	9413842030
6.	**शिक्षा विभाग**	डॉ. माताप्रसाद शर्मा	विभागाध्यक्ष	9929773201
		डॉ. दिवाकर मिश्र	सहायक आचार्य	9829560632
		डॉ. कुलदीप सिंह	सहायक आचार्य	9460910985
7.	**योग विज्ञान विभाग**	श्री महेश शर्मा	विभागाध्यक्ष	9214316999
		डॉ. शत्रुघ्न सिंह	सहायक आचार्य	9663306972
		श्रीमती वन्दना राठौड़	सहायक आचार्य	8762414369

नवग्रह एवं नक्षत्र वाटिका (निर्माणाधीन)

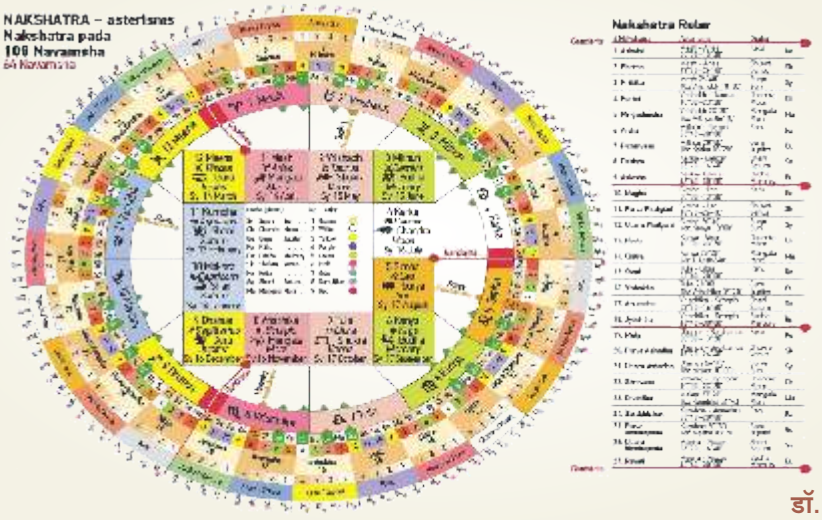

प्रभारी
डॉ. संदीप जोशी

संस्कृत विश्वविद्यालय में 18 समितियां

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के चहुंमुखी विकास को लेकर पहली बार अनेक कमेटियां बनाई गई है। कुलपति महोदय के निर्देश से विश्वविद्यालय द्वारा जारी आदेश क्रमांक 16367 दिनांक 19-9-2019 के द्वारा 18 कमेटियों का गठन किया गया है। विश्वविद्यालय में इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट कमेटी और एकेडमिक एडवाइजरी कमेटी समेत विभिन्न कमेटियों में 65 सदस्य नियुक्त किए गए हैं।

	समिति का नाम	संयोजक
1.	फिजीकल वेरीफिकेशन कमेटी	डॉ. शम्भुकुमार झा, सहायक आचार्य, वेद विभाग
2.	लोकल पर्जेज कमेटी	डॉ. रामेश्वरनाथ द्विवेदी, सहायक आचार्य, दर्शन विभाग
3.	इन्टरनल ऑडिट कमेटी	वित्त नियंत्रक
4.	स्टोक एण्ड स्टोर वेरीफिकेशन कमेटी	डॉ. शिवाकान्त मिश्र, सहायक आचार्य, ज्योतिष विभाग
5.	ग्रीवेंसेज कमेटी	डॉ. कुलदीप सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
6.	अपील आथॉरिटी (RTI)	माननीय कुलपति
7.	पी. आई. ओ. /ए.पी.आई.ओ.(RTI)	कुलसचिव, पी.आई.ओ.
8.	वेबसाईट कमेटी	डॉ. शशि कुमार शर्मा, सहायक आचार्य
9.	एकेडमिक एडवाईजरी कमेटी	डॉ. राजधर मिश्र, सह आचार्य
10.	स्कॉलरशिप एण्ड फी-कन्सेसन कमेटी	डॉ. विनोद कुमार शर्मा, सह आचार्य
11.	कैंटीन कमेटी	डॉ. दिवाकर मिश्र, सहायक आचार्य
12.	गार्डन कमेटी	डॉ. कैलाश चन्द शर्मा
13.	इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलमेंट कमेटी	कुलसचिव
14.	लाईब्रेरी कमेटी	डॉ. माताप्रसाद शर्मा, सह आचार्य
15.	हॉस्टल कमेटी	डॉ. देवेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य
16.	गांधी अध्ययन केन्द्र	श्री महेश शर्मा, सहायक आचार्य
17.	अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र	श्री महेश शर्मा, सहायक आचार्य
18.	महिला अध्ययन केन्द्र	डॉ. स्नेहलता शर्मा, सहायक आचार्य

शैक्षणिक वार्षिक कार्यक्रम 2023-24

1.	व्याकरण विभागीय संगोष्ठी	अगस्त, 2023
2.	ज्योतिष विभागीय संगोष्ठी	सितम्बर, 2023
3.	शिक्षा विभागीय संगोष्ठी	अक्टूबर, 2023
4.	दर्शन विभागीय संगोष्ठी	नवम्बर, 2023
5.	वेद विभागीय संगोष्ठी	दिसम्बर, 2023
6.	योग विभागीय संगोष्ठी	जनवरी, 2024
7.	साहित्य विभागीय संगोष्ठी	फरवरी, 2024
8.	राजस्थान मन्त्र प्रतिष्ठान	मार्च, 2024
9.	अनुसंधान केन्द्र	अप्रेल, 2024

संस्कृत में रोजगार एवं स्वरोजगार

रोजगार

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से अध्ययनोपरान्त निर्गत छात्र-छात्राएँ विभिन्न सेवाओं में जाकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं जिनका विवरण निम्नानुसार है-

1. **प्राथमिक शिक्षा सेवा**-में संस्कृत विषय से वरिष्ठोपाध्याय/सीनियर सैकण्डरी के पश्चात् BSTC करके शिक्षक के रूप में सेवाकार्य कर सकता है।

2. **माध्यमिक शिक्षा सेवा -** में संस्कृत विषय से स्नातकोपरान्त शिक्षाशास्त्री के साथ माध्यमिक शिक्षाक्षेत्र की विभिन्न सरकारी सेवाओं में अपना योगदान दे सकते हैं।

3. **उच्च शिक्षा सेवा**- (1) स्नातकोत्तर/आचार्य के पश्चात् **NET** एवं **Ph.D.** करके कॉलेज शिक्षा, विश्वविद्यालय शिक्षा में असिस्टेण्ट प्रोफेसर के पद पर कार्य कर सकते हैं।

4. **प्रशासनिक सेवा**- संस्कृत से स्नातक/स्नातकोत्तर छात्र आधुनिक विषय के साथ संस्कृत का वैकल्पिक विषय के रूप में चयन कर भारतीय एवं राज्यस्तरीय प्रशासनिक सेवाओं में कार्य कर सकते हैं।

5. **अन्य राजकीय सेवा**- स्नातक/स्नातकोत्तर छात्र आधुनिक विषय के साथ विभिन्न भारतीय सेवाक्षेत्रों में प्रतियोगिता परीक्षा के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं यथा- रेलवे, सेना, पुलिस, बैंक, डाकघर, लिपिकवर्ग इत्यादि।

स्वरोजगार

विश्वविद्यालय में संस्कृतभाषा के माध्यम से संस्कृत सम्बन्धी विभिन्न शास्त्रों एवं विषयों के अध्ययनोपरान्त छात्र/छात्राओं के लिए स्वरोजगार के अवसर निम्नानुसार हैं -

1. ज्योतिष अनुसंधान एवं परामर्श केन्द्र
2. वास्तु परामर्श केन्द्र
3. पंचांग निर्माण केन्द्र
4. सामुद्रिक परामर्श केन्द्र
5. कर्मकाण्ड पौरौहित्य कार्य
6. सेना में धर्मगुरु पद पर नियुक्ति
7. कथावाचक/उपदेशक कार्य
8. संस्कृत-टंकण कार्य
9. अनुवादशिक्षण केन्द्र
10. संस्कृत शिक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्र
11. शास्त्रशिक्षण केन्द्र
12. नाट्यशिक्षण केन्द्र/ललितकला केन्द्र
13. संस्कृत पत्रकारिता संस्थान
14. संस्कृत गीत एवं अनुवादशाला
15. भाषा-प्रयोगशाला
16. पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संवर्धन केन्द्र
17. योग-साधना केन्द्र
18. कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र
19. दार्शनिक-प्रबोधन केन्द्र
20. मनोविज्ञान-परामर्श केन्द्र
21. संस्कृत समाचार वाचक

उक्त समस्त प्रकल्पों से सम्बन्धित स्वरोजगारों के साथ ही विभिन्न राजकीय प्रशासनिक, शैक्षणिक तथा अन्य सेवाओं में भी संस्कृत विषय के छात्र रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।